पंचग्रन्थ

अध्याय
ग्यारह

निर्गमन का सिंहावलोकन

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2014 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इन्टरनेशनल., 316 लाईव ओक रोड़., कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 से लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या छात्रवृत्ति के प्रयोजनों के लिए संक्षिप्त टिप्पणियों को छोड़कर किसी भी रूप में या लाभ प्राप्ति के लिए किसी भी तरह से पुन:उत्पादित नहीं किया जा सकता है।

यदि कहीं और नहीं बताया गया तो पवित्रशास्त्र की सभी टिप्पणियाँ हिन्दी की पवित्र बाइबिल से ली गई हैं। 1973, 1978, 1984, 2011 अंतरराष्ट्रीय बाइबिल सोसायटी © सर्वाधिकार सुरक्षित। जानडरवॉन बाइबिल प्रकाशक की अनुमति के द्वारा प्रयुक्त किए गये हैं।

थर्ड मिलेनियम की मसीही सेवा के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मसीही सेवकाई एक लाभनिरपेक्ष मसीही संस्था है जो कि **मुफ्त में**, **पूरी दुनिया के लिये**, **बाइबल पर आधारित शिक्षा** मुहैया कराने के लिये समर्पित है। उचित, बाइबल पर आधारित, मसीही अगुवों के प्रशिक्षण हेतु दुनिया भर में बढ़ती मांग के जवाब में, हम सेमीनरी पाठ्यक्रम को विकसित करते हैं एवं बाँटते हैं, यह मुख्यतः उन मसीही अगुवों के लिये होती है जिनके पास प्रशिक्षण साधनों तक पहुँच नहीं होती है। दान देने वालों के आधार पर, प्रयोग करने में आसानी, मल्टीमीडिया सेमीनरी पाठ्यक्रम का 5 भाषाओं (अंग्रेजी, स्पैनिश, रूसी, मनडारिन चीनी और अरबी) में विकास कर, थर्ड मिलेनियम ने कम खर्च पर दुनिया भर में मसीही पासबानों एवं अगुवों को प्रशिक्षण देने का तरीका विकसित किया है। सभी अध्याय हमारे द्वारा ही लिखित, रुप-रेखांकित एवं तैयार किये गये हैं, और शैली एवं गुणवत्ता में द हिस्ट्री चैनल © के समान हैं। सजीवता के प्रयोग एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट चलचित्र उत्पादन के लिये थर्ड मिलेनियम 2 टैली पुरस्कार जीत चुका है, और हमारा पाठ्यक्रम 192 भी ज्यादा देशों में प्रयोग हो रहा है। हमारी सामग्री डी.वी.डी, छपाई, इंटरनेट, उपग्रह द्वारा टेलीविज़न प्रसारण, रेडियो, और टेलीविज़न प्रसार का रूप लेते हैं।

हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार से उसमें शामिल हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org. पर जाएँ।

विषय-वस्तु सूची

I. परिचय 1

II. आरम्भिक सोचविचार 1

क. ग्रन्थकारिता 2

ख. अवसर 3

ग. मूल अर्थ 4

1. पृष्ठभूमियाँ 5
2. आदर्श नमूने 5
3. प्रतिछाया 6

घ. आधुनिक उपयोग 8

III. सरंचना एवं विषय-वस्तु 10

क. मिस्र से छुटकारा 11

1. छुटकारे से पहले 11
2. छुटकारे के मध्यहान् 13

ख. कनान के लिए तैयारी 15

1. इस्राएल की वाचा 15
2. इस्राएल का मिलाप का तम्बू 18

IV. मुख्य विषय 20

क. वाचा संभालने वाला 22

ख. विजयी योद्धा 24

1. मिस्र में 24
2. पलायन के मध्य में 25

ग. व्यवस्था की वाचा देने वाला 26

घ. वर्तमान का योद्धा 28

V. सारांश 31

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

पंचग्रन्थ

अध्याय ग्यारह

निर्गमन का सिंहावलोकन

परिचय

प्रत्येक संगठन परिवर्तनों से होकर निकलता है, परन्तु ये परिवर्तन थोड़े से अवरोध उत्पन्न करने वाले हो सकते हैं जब नेतृत्व एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को पारित होता है। जब कलीसिया का संस्थापक सदस्य मर जाता है, या किसी व्यवसाय का उद्यमी सेवानिवृत होता है, वे जो उत्तरदायित्वों को पाते हैं नई चुनौतीयों का सामना करते हैं। इस कारण, एक प्रश्न जो सदैव सामने आ जाता है वह यह है कि: कितना ज्यादा नई पीढ़ी को पिछली पीढ़ी की प्राथमिकताओं और आचरणों का अनुसरण करना चाहिए।

कई तरीकों में, इस्राएल के लोगो ने इस प्रश्न का सामना किया जब उन्होंने प्रतिज्ञात् भूमि की सीमाओं के ऊपर अपने तम्बूओं को खड़ा किया। इसलिए,उन्हें जानने की आवश्यकता थी कि उन्हें कितना ज्यादा उन प्राथमिकताओं और आचरणों का अनुसरण करना चाहिए जिन्हें मूसा ने उनके लिए स्थापित किया था। क्या उन्हें किसी और मार्ग का अनुसरण करना चाहिए? या क्या उन्हें निरन्तर मूसा के मार्गों के ऊपर चलते रहना चाहिए था? बाइबल की दूसरी पुस्तक, वह पुस्तक जिसे हम अब निर्गमन के नाम से पुकारते हैं, इन ही और इनके जैसे ही प्रश्नो के उत्तरों को देने के लिए रूपरेखित की गई है।

यह अध्याय *पंचग्रन्थ* के उस भाग को देखता है जिसमें बाइबल की दूसरी पुस्तक का अध्ययन किया गया है। जिसका शीर्षक हमने "निर्गमन का सिंहावलोकन" दिया है। इस अध्याय में, हम कुछ मूलभूत विषयों की खोज करेंगे जो हमें और अधिक गहनता से यह देखने के लिए तैयार करेंगे कि निर्गमन का क्या अर्थ है जब यह पहली बार लिखी गई थी और इसे कैसे हमारे आज के जीवनों में लागू करना चाहिए।

हमारा यह अध्याय तीन मुख्य भागों में विभाजित होगा। प्रथम, हम कुछ आरम्भिक सोचविचारों को अपने सामने रखेंगे जब हम निर्गमन का अध्ययन करते हैं। दूसरा, हम पुस्तक की सरंचना और विषय-वस्तु की खोज करेंगे। और तीसरा, हम निर्गमन के कुछ मुख्य विषयों को देखेंगे। आइए सबसे पहले हम कुछ आरम्भिक सोचविचार या सरोकारों को देखते हैं।

आरम्भिक सोचविचार

मसीह के अनुयायी होने के नाते, हम उचित ही विश्वास करते हैं कि निर्गमन की पुस्तक पवित्र आत्मा की प्रेरणा के अधीन लिखी गई थी, और यह कि यह परमेश्वर का वचन है। यह विश्वास हमें स्मरण दिलाता है कि हम एक सामान्य पुस्तक के साथ व्यवहार नहीं कर रहे हैं। निर्गमन एक पवित्र पवित्रशास्त्र है जिसे परमेश्वर ने उसके लोगों को दिया। इसलिए, इस तरीके में या उस तरीके में, मसीह के अनुयायी होने के लिए, इस पुस्तक का आज आपके और मेरे ऊपर अधिकार है। परन्तु उसी समय, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि परमेश्वर ने यह पुस्तक सबसे पहले उन लोगों को दी जो हजारों वर्ष पहले जीवन यापन कर रहे थे। इसलिए, यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि हमारे आधुनिक उपयोग इस पुस्तक के उद्देश्य के साथ सत्य हैं जब इसे सबसे पहले लिखा गया था।

हम चार भिन्न आरम्भिक सोचविचारों को परिचित कराएँगे जब हम निर्गमन की पुस्तक को देखना आरम्भ करते हैं। सबसे पहले, हम इसकी ग्रन्थकारिता को स्पर्श करेंगे। यह पुस्तक किसने लिखी? दूसरा, हम उस अवसर की खोज करेंगे, कि यह पुस्तक कब और कहाँ पर लिखी गई थी। तीसरा, हम निर्गमन के मूल अर्थ को सारांशित करेंगे। और चौथा, हम यह सम्बोधित करेंगे कि कैसे इस पुस्तक के इन विषयों को हमारे आधुनिक उपयोग को सम्बोधित करना चाहिए। आइए सबसे पहले निर्गमन की ग्रन्थकारिता को देखें।

ग्रन्थकारिता

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

निर्गमन के ग्रन्थकार का प्रश्न सम्पूर्ण पंचग्रन्थ के ग्रन्थकार के ऊपर लम्बे और जटिल विवाद का एक हिस्सा रही है। परन्तु इस अध्याय में, हम केवल कुछ उन तरीकों का उल्लेख करेंगे जिसमें यह विवाद निर्गमन के ऊपर लागू होते हैं।

निर्गमन का सरसरी पठ्न कम से कम हमें बताता है, कि मूसा का इस पुस्तक की विषय वस्तु के साथ बहुत कुछ लेना देना है। निर्गमन निरन्तर यह दावे करती है कि परमेश्वर ने इसमें से बहुत कुछ को बड़ी स्पष्टता के साथ सीनै पर्वत पर मूसा को प्रकाशित किया। इसमें दस आज्ञाएँ, वाचा की पुस्तक, और इस्राएल के मिलाप के तम्बू के लिए निर्देश सम्मिलित हैं।

परन्तु, जैसा कि हमने पंचग्रन्थ के अन्य अध्यायों में देखा, अधिकांश आलोचनात्मक विद्वानों ने मूसा के ग्रन्थकार होने को अस्वीकार कर दिया है। उन्होंने यह तर्क दिया है कि पंचग्रन्थ का धर्मविज्ञान, जिसमें निर्गमन सम्मिलित है, मूसा के दिनों में से निकलकर आने की अपेक्षा बहुत अधिक उन्नतशील है। और वे इसकी अपेक्षा इस बात पर दृढ रहे हैं, कि वह छठी ईस्वी पूर्व में बाबुल की बन्धुवाई के अन्त से पहले पूरी हुई हैं।

यद्यपि यह आलोचनात्मक दृष्टिकोण बहुत ज्यादा फैले हुए थे, इनकी पृष्ठभूमि में पड़ी हुई ऐतिहासिक और धर्मवैज्ञानिक पूर्वधारणाएँ उच्च स्तर के चिन्तन किए हुए और अविश्वसनीय हैं। इसी के साथ, सुसमाचारवादी दृष्टिकोण से, यह महत्वपूर्ण है कि हम पवित्रशास्त्र में पाई जाने वाली अधिकारिक गवाहियों का अनुसरण करते हैं। पुराने नियम के लेखकों और मसीह और उसके प्रेरितों और भविष्यद्वक्ता सभी ने इस दृष्टिकोण का एकमत हो समर्थन किया है कि मूसा ही सम्पूर्ण पंचग्रन्थ, जिसमें निर्गमन की पुस्तक सम्मिलित है, का लेखक होने के रूप में उत्तरदायी है।

अब, सुसमाचावादियों ने उचित ही मूसा के ग्रन्थकार होने के विश्वास को मान्यता मूसा को इस पुस्तक का "मौलिक," "वास्तविक", या "आवश्यक" लेखक होने की बुलाहट देकर की है। इसका अर्थ यह संभावना अत्यधिक नहीं है कि मूसा बस नीचे बैठे गया होगा और निर्गमन की पुस्तक को अपने हाथों से लिखता चला गया होगा। परन्तु मूसा इस पुस्तक में उल्लेख की हुई प्रत्येक घटना का विश्वसनीय प्रत्यक्षदर्शी था, कदाचित् अपने जन्म और अपनी आरम्भिक शिशुवस्था की घटनाओं के सम्मिलित होने को छोड़कर। यह संभावना अधिक है कि उसने उसके दिनों में प्रचलित जातीय प्रधानों के रीति रिवाज का अनुसरण किया होगा और शास्त्रियों या लिपिकों को अपने निर्देशन में लिखने के लिए काम पर लगाया होगा। परन्तु फिर भी, जो कुछ घटित हुआ, उसके लिए हम आश्वस्त हो सकते हैं कि निर्गमन मूसा के दिनों के मध्य में किसी समय पवित्र आत्मा की प्रेरणा के अधीन संकलित हुई थी।

> **यह प्रश्न कि किसने निर्गमन की पुस्तक को लिखा एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न है, और जैसा कि हम स्वयं इस पुस्तक के मूलपाठ को पढ़ते हैं, और इतिहास की घटनाओं को गंभीरता से लेते हैं जिसका यह उल्लेख करती है, तो यह सोचने का कोई कारण नहीं है कि मूसा ने निर्गमन की पुस्तक के अधिकांश भाग को नहीं लिखा जैसा कि यह आज वर्तमान में हमारे पास है। मूसा इस पुस्तक में परमेश्वर के प्रवक्ता के रूप में दिखाया गया है। सम्पूर्ण पंचग्रन्थ में उसे एक विशेष प्रवक्ता के रूप में, परमेश्वर के लोगों के सम्पूर्ण इतिहास में ऐसे प्रदर्शित किया गया है, कि वह एक ऐसा व्यक्ति है जो परमेश्वर को उसके पश्चात् स्वयं यीशु के आने तक किसी अन्य भविष्यद्वक्ता से कहीं अधिक जानता था। और क्योंकि वह परमेश्वर को बहुत अधिक घनिष्ठता से जानता था, उससे आमने सामने बातें की जैसे एक मनुष्य अपने एक मित्र के साथ बातें करता था, और उसकी उसके लोगों के लिए परमेश्वर के प्रवक्ता के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका थी। और क्योंकि पुराना नियम, जैसा कि यह पंचग्रन्थ के पश्चात् चलता रहता है, मूसा की इस पुस्तक तोराह का उल्लेख करता है और लोगों को इसके ऊपर दिन और रात ध्यान दिए रहने के लिए उत्साहित करता है, यह सोचने के भाव को उत्पन्न करता है कि मूसा ही इस पुस्तक का लेखक है। अब, हो सकता है कि अद्यतन की कुछ बातें हो जो कि समय के व्यतीत होने के साथ स्थानों के नामों के साथ या यहाँ तक कि कुछ व्याकरणीय रूपों और बातों में घटित हुई होगी, जो एक प्रेरित किए जाने वाले हाथ, इस्राएल में एक भविष्यद्वक्तिय हाथ के द्वारा घटित होती हैं। परन्तु हाँ, मैं सोचता हूँ कि निर्गमन की पुस्तक मूसा की लेखनी के द्वारा, मूसा की शैली से आती है...और इसलिए, मूसा न केवल इस्राएल के लिए परमेश्वर के**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

मुख्य प्रवक्ता के साथ प्रदर्शित किया गया है, अपितु एक लेखक, पुस्तक के लेखक के रूप में प्रदर्शित किया गया है। - प्रोफेसर. थॉमस ऐगर

मूसा के ग्रन्थकार होने के इन विचारों को ध्यान में रखते हुए, हमें आरम्भिक सोचविचारों की दूसरी सूची, अवसर, या परिस्थितियों की ओर मुड़ना चाहिए, जिनमें निर्गमन लिखी गई थी।

अवसर

व्यापक अर्थों में कहना, मूसा ने निर्गमन को किसी समय निर्गमन 3:1-4:31 में जलती हुई झाड़ी और व्यवस्था विवरण 34:1-12 में मोआब के मैदानी क्षेत्रों में उसकी मृत्यु के मध्य में लिखा। परन्तु प्रमाण हमें इससे भी ज्याजा सटीक होने के लिए सक्षम बनाते हैं। निर्गमन के कम से कम दो संदर्भ यह प्रगट करते हैं कि पुस्तक वास्तव में तब पूरी हुई थी जब इस्राएल ने प्रतिज्ञात् भूमि की सीमाओं के ऊपर अपने तम्बूओं को खड़ा किया था। सुनिए निर्गमन 16:35 को जहाँ पर हम इन शब्दों को पढ़ते हैं कि:

इस्राएली जब तक बसे हुए देश में न पहुँचे तब तक, अर्थात् चालीस वर्ष तक मन्ना खाते रहे; वे जब तक कनान देश के सीमा पर नहीं पहुँचे तब तक मन्ना खाते रहे (निर्गमन 16:35)।

स्पष्ट है कि, इन घटनाओं को निर्गमन की पुस्तक के पूरा होने से पहले घटित होना चाहिए था। इस तरह से, हम जानते हैं कि इस्राएली पहले से ही "चालीस वर्षों" से घूम फिर रहे थे। और वे "बसे हुए देश तक" या "कनान देश के सीमा पर" पहुँच गए थे।

यही झलक निर्गमन 40:38 में इस पुस्तक के अन्तिम वचन के अन्तिम संकलन के समय में प्रगट होती है:

इस्राएल के घराने की सारी यात्रा में दिन को तो यहोवा का बादल निवास पर, और रात को उसी बादल में आग उन सभों को दिखाई दिया करती थी (निर्गमन 40:38)।

ध्यान दें कि यह संदर्भ मिलाप के तम्बू के ऊपर उनकी "*सारी* यात्रा के समय में" परमेश्वर की महिमामयी उपस्थिति का उल्लेख करता है। यह ऐतिहासिक टिप्पणी स्पष्ट प्रमाणित करती है कि मूसा ने निर्गमन की पुस्तक को उसके जीवन के उत्तरोत्तर काल में लिख कर पूरा कर दिया था। उसने इसे इस्राएलियों के भ्रमण के चालीस वर्षों को पूरा करने और मोआब के मैदानों में पहुँचने के *पश्चात्* लिखा था।

अभी तक, हमने निर्गमन की पुस्तक के ग्रन्थकार और अवसर के सम्बन्ध में कई आरम्भिक सोचविचारों या सरोकारों को देखा है। अब, हम इसके मूल अर्थ को सारांशित करने की स्थिति में हैं। क्यों परमेश्वर ने मूसा को निर्गमन की पुस्तक का संकलन करने दिया? और कैसे मूसा ने मोआब के मैदानों में उसके मूल पाठकों को प्रभावित करने की आशा की?

मूल अर्थ

आरम्भ से ही, हमें ध्यान देना चाहिए कि मूसा के पास कई सामान्य उद्देश्य थे जो अकसर पुराने नियम में प्रगट होते हैं। उदाहरण के लिए, निर्गमन ईश्वरीयगान के रूप में लिखा हुआ है क्योंकि इसने निरन्तर इस्रालियों को परमेश्वर की स्तुति और आराधना के लिए नेतृत्व प्रदान किया। परन्तु यह साथ मे धर्मवैज्ञानिक भी है क्योंकि यह परमेश्वर के सत्यों के विवरण की पुनरावृत्ति करता है। और यह पूरी पुस्तक इस अर्थ में राजनैतिक है कि इसे इस्राएल के राष्ट्रीय जीवन को आकार देने के लिए रूपरेखित किया गया था। इसके साथ यह धर्ममंडन के लिए है क्योंकि यह झूठे दृष्टिकोणों का विरोध करती है। यह नैतिक है क्योंकि यह प्रगट करती है कि कैसे इस्राएल को परमेश्वर की आज्ञापालन करना था। और यह प्रेरणादायक है क्योंकि यह परमेश्वर के प्रति निष्ठावान् होने को उत्साहित करती है और निष्ठाहीनता के विरुद्ध चेतावनी देती है। ये और कई अन्य सदृश उद्देश्य सामान्य रूप में निर्गमन की पूरी पुस्तक को चित्रित करते हैं।

जबकि निर्गमन इन और कई अन्य गुणों को बाइबल की अन्य पुस्तकों के साथ साझा करती है, मूसा का साथ ही निर्गमन को लिखने के लिए एक विशेष, मुख्य उद्देश्य भी रहा था। यह इस उद्देश्य को निम्न विचारों के आधार पर संक्षेप में एकीकृत करते हुए प्रस्तुत करने में सहायतापूर्ण है:

निर्गमन की पुस्तक मूसा को निर्गमन की पहली पीढ़ी को दूसरी पीढ़ी के लिए यह दिशा निर्देश देने के लिए ईश्वरीय-नियुक्त अधिकारी ठहराती है कि वह मूसा के स्थाई अधिकार को उनके जीवनों में स्वीकार करें।

यह सार तीन तथ्यों को स्पर्श करता है जो हमें निर्गमन के मूल अर्थ की ओर एक सहायतापूर्ण दिशा-निर्देश देता है। सर्वप्रथम, यह हमें स्मरण दिलाता है, कि इस पुस्तक का अधिकांश भाग, निर्गमन की पहली पीढ़ी के *बारे* में लिखा हुआ है, परन्तु उसी समय, यह पुस्तक निर्गमन की दूसरी पीढ़ी के *लिए* भी लिखी गई थी।

प्रत्येक निर्गमन की पुस्तक से परिचित यह जानता है कि इसका अधिकांश भाग उन घटनाओं का विवरण देता है कि जो कि तब घटित हुई जब मूसा इस्राएलियों को मिस्र से निकाल कर लाया। हम इस समय को इतिहास का "वह संसार" कह कर पुकार सकते हैं। परन्तु फिर भी, सब कुछ जिसे निर्गमन पहली पीढ़ी के "वह संसार" के बारे में कहती है निर्गमन की *दूसरी* पीढ़ी के बताने के लिए सारांशित किया गया है, जिसे हम "उनका संसार" कह कर पुकार सकते हैं।

अब, इस बात को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है कि बहुत कम प्राचीन इस्राएली पढ़ लिख सकते थे। इस कारण, जब हम दूसरी पीढ़ी "पाठकों" के बारे में बात करते हैं, तो हमारे कहने का अर्थ यह नहीं है कि प्रत्येक पुरूष, स्त्री और बच्चे ने निर्गमन की एक नकल कापी को ले लिया होगा और स्वयं के लिए इसका पठ्न किया होगा। इसके विपरीत, पुराने नियम के अन्य भागों की तरह, मूसा ने निर्गमन को मूल रूप से इस्राएल के *प्रधानों* के लिए लिखा था। यहोशू, आदिवासी प्रधान, न्यायियों और याजकों और लेवी इसके प्राथमिक ध्यानाकर्षण के लोग थे। इस कारण से, निर्गमन सबसे अधिक स्पष्ट रूप से उन विषयों को सम्बोधित करता है जिसे एक जाति के रूप में दूसरी पीढ़ी ने सामना किया था।

यह ध्यान देना भी महत्वपूर्ण है कि मूसा का अधिकांश ध्यान अस्पष्ट रूप से "उनके संसार" को स्मरण दिलाने के लिए केन्द्रित है। परन्तु फिर भी, दूसरी पीढ़ी पर्याप्त मात्रा में हमें विश्वस्त करने के लिए हमारे सामने निकल कर आती है कि मूसा ने "उनके संसार" को ध्यान में रखते हुए लिखा था। जैसा कि हमने पहले ही देख लिया है कि, दोनों अर्थात् निर्गमन 16:35 और 40:38 दूसरी पीढ़ी का उल्लेख करती है। इसके अतिरिक्त, निर्गमन 6:13-27 में वंशावलियाँ पीनहास, हारून के पोते तक विस्तारित होती हैं। और जैसा कि हम बाद में देखेंगे कि कई अन्य संदर्भ उन विषयों को सम्बोधित करते हैं जो कि विशेष रूप से दूसरी पीढ़ी के लिए प्रासंगिक थे। यह और कई अन्य संदर्भ संकेत देते हैं कि मूसा ने दोनो बातों को ध्यान में रखा अर्थात् निर्गमन की पहली और दूसरी पीढ़ी को जब उसने इस पुस्तक को संकलित किया।

निर्गमन के लिए मूसा के मूल उद्देश्य के प्रति हमारे सार का दूसरा पहलू यह कि जो कुछ "पहली पीढ़ी" के लिए कहा गया है वह "दूसरी पीढ़ी को *दिशा-निर्देश देने*" के लिए लिखा गया था। ऐसा कहने का यह अर्थ है कि मूसा ने निर्गमन की पुस्तक को पूर्ण अधिकार के साथ लिखा कि उसके मूल रूप से, दूसरी पीढ़ी के पाठक परमेश्वर की सेवा करने में आज्ञापालन करें।

जब हम निर्गमन की पुस्तक को पढ़ते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि मूसा ने सावधानी से उसके ऐतिहासिक विवरण को दूसरी पीढ़ी के लिए प्रासंगिक बनाया। उन लोगों को जो उसके साथ कनान की सीमाओं के ऊपर तम्बूओं में डेरा डाले हुए को सम्बोधित करने के लिए उसे पहली और दूसरी पीढ़ी के मध्य में कई विभिन्नताओं का सावधानीपूर्ण ध्यान रखना था। उसे जानकारी थी कि वह भिन्न समयों और स्थानों में रहते थे, और उन्होंने बहुत सी भिन्न चुनौतीयों का सामना किया था। इस कारण, मूसा ने बड़ी कुशलता के साथ निर्गमन के प्रत्येक अंश को उनके मध्य में सम्पर्क बिन्दुओं को दर्शाते हुए स्थापित किया। इन सम्पर्कों ने उसके मूल पाठकों को उनके बीच और उनके पीछे आने वालों के मध्य खाई पाटने का कार्य किया।

पृष्ठभूमियाँ

मूसा ने मूल रूप से तीन तरह के सम्पर्कों को स्थापित किया जिसने इस पुस्तक के अधिकार को उसके मूल पाठकों के लिए स्पष्ट कर दिया। उसके सबसे सरल सम्पर्क ऐतिहासिक पृष्ठभूमियों को मिलाकर निर्मित हुए हैं। ये संदर्भ मूल पाठकों के विशेषाधिकारों और उत्तरदायित्वों के ऐतिहासिक आधारों पर केन्द्रित हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

एक तरह की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि निर्गमन 3:8 में प्रगट होती है जहाँ पर परमेश्वर का इस्राएलियों को की हुई प्रतिज्ञा उस प्रतिज्ञा को पूरा करने के साथ सम्बन्धित है। इस वचन में, परमेश्वर ने इस्राएल को मिस्र में बाहर निकाल कर "दूध और मधु की धाराओं की एक भूमि" पर ले आने की प्रतिज्ञा की है। यह भविष्यद्वाणी मूसा के पाठकों के लिए प्रासंगिक थी क्योंकि वे उनके दिनों में इसे पूरा होते हुए देखने की छोर पर थे।

अन्य तरह की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पहली पीढ़ी को दी हुई परमेश्वर की आज्ञा में और इसके पश्चात् दूसरी पीढ़ी के दायित्वों में प्रगट होती है। उदाहरण के लिए, निर्गमन 20:1-17 में, मूसा ने उल्लेख किया है कि कैसे परमेश्वर ने पहली पीढ़ी को दस आज्ञाएँ दी थी। इस घटना ने दूसरी पीढ़ी के लिए नैतिक दायित्वों के आधार को निर्मित किया था।

आदर्श

ऐतिहासिक पृष्ठभूमियों के अतिरिक्त, मूसा ने इसी के साथ उसके पाठकों को ऐतिहासिक नमूनों या आदर्शों का भी प्रबन्ध किया जिन्हे उन्हें या तो अनुकरण करना था या अस्वीकार। इस तरह के सम्बन्धों को स्थापित करने के लिए, मूसा ने कुछ संदर्भों को पहली और दूसरी-पीढ़ी के पाठकों के मध्य में सारगर्भित समानताओं की ओर संकेत करने के लिए आकार दिया।

बहुत से संदर्भों में, मूसा ने इस तरह की समानताओं को उसके मूल पाठकों को नकारात्मक आदर्शों को अस्वीकार करने के लिए दिया। उदाहरण के लिए, इस्राएल का सीनै पर्वत की ओर पलायन के समय पुनरावृत्ति होता हुआ विद्रोही रूप में निर्गमन 15:24 और 17:3 में बड़बड़ना, नकारात्मक आदर्शों को प्रस्तुत करता है जिसे दूसरी पीढ़ी को अस्वीकार करना चाहिए था।

इसके विपरीत, मूसा ने उसके पाठकों को अनुकरण करने के लिए सकारात्मक आदर्श भी दिए। उदाहरण के लिए, इस्राएल को निर्गमन 36:8-38 में मिलाप वाले तम्बू के निर्माण में परमेश्वर के निर्देशों का अनुपालन करना था। इसने अनुकरण करने के लिए दूसरी पीढ़ी के लिए एक सकारात्मक आदर्श को प्रस्तुत किया जब उन्हें बाद में मिलाप वाले तम्बू पर परमेश्वर की सेवा करनी थी।

और मूसा ने मिश्रित आदर्शों, पात्रों को भी प्रस्तुत किया, जिन्होंने दोनों अर्थात् सकारात्मक और नकारात्मक गुणों को प्रस्तुत किया। केवल एक उदाहरण के रूप में, निर्गमन 7:8-13 में, हारून ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया और अपनी लाठी को फिरौन के सामने नीचे फेंक दिया। उसकी आज्ञाकारिता ने मिस्र से इस्राएल का छुटकारा करने में योगदान दिया। परन्तु 32:1-35 में, उसने आराधना करने के लिए लोगों के लिए एक सोने के बछड़े को बनाया, और उसकी अनाज्ञाकारिता इस्राएल को गंभीर दण्ड की ओर ले गई। इसने दूसरी-पीढ़ी के पाठकों को दोनों अनुकरण और अस्वीकार करने के लिए मिश्रित आदर्श को दिया।

प्रतिछाया

तीसरे स्थान पर, कुछ अवसरों पर मूसा ने घटनाओं के अपने विवरण को उसकी दूसरी-पीढ़ी के पाठकों के लिए ऐतिहासिक प्रतिछाया, या पूर्वाभासों की जानकारी देने के लिए दिया।

> **आधुनिक फिल्म और साहित्य की तरह ही, बाइबल आधारित कथा में अकसर लेखक प्रतिछाया का उपयोग करते हैं। और हमारे पास इसका अच्छा उदाहरण निर्गमन की पुस्तक में मिलता है, जब मूसा मिस्र को छोड़ने के पश्चात्, कुएँ के पास पहुँचता है और यित्रो की पुत्रियों की सहायता नीच-विचारों वाले चरवाहों से बचाने या छुटकारा देने के द्वारा करता है। और मूलपाठ मूसा को छुटकारा देने वाले की भूमिका में, जैसा कि वह था, प्रगट करता है। यह ठीक है, क्योंकि यह प्रतिछाया दिखाती है कि परमेश्वर उसके द्वारा क्या करने पर था। वह मिस्र को जाने वाला था और परमेश्वर के लोगों को बन्धन से छुटकारा देने वाला था। - डॉ. राबर्ट बी. चिसहोम, जूनीयर**

इस तरह के सम्पर्क निर्गमन में उतने ज्यादा प्रगट नहीं होते हैं जितने पुराने नियम की अन्य पुस्तकों में होते हैं। परन्तु कुछ घटनाओं में, मूसा ने अतीत की घटनाओं को इस तरीके से वर्णन दिया है कि लगभग यह उसके मूल पाठकों के अनुभव के साथ पूर्णता के साथ इनके सदृश ठहरी हैं। ये प्रतिछाया संकेत देती हैं, कि इतिहास जैसा था वैसे ही, दूसरी पीढ़ी के दिनों में स्वयं पुनरावृत्ति हो रहा था। उदाहरण के लिए, निर्गमन 13:18 में इस्राएली

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

"पाँति बाँधे हुए मिस्र से निकल गए" अर्थात् शास्त्र धारण किए हुए युद्ध के लिए बाहर निकल आए। पहली पीढ़ी का यह सैन्य प्रबन्धन इस बात की प्रतिछाया है कि कैसे दूसरी पीढ़ी को भी कनान पर विजयी प्रवेश के लिए सैन्य तैयारी के साथ प्रबन्ध करना होगा।

इसी तरह से, निर्गमन 40:34-38 ध्यान देता है कि एक बार जब मिलाप का तम्बू सही रूप से कार्य कर रहा था, तो परमेश्वर आग और धुएँ के रूप में प्रगट होता जब उसने उसके लोगों का मार्गदर्शन पलायन में किया। यह ऐतिहासिक वास्तविकता इस बात का पूर्वाभास है, कि 40 वर्षों के पश्चात्, परमेश्वर की उपस्थिति दूसरी-पीढ़ी के पाठकों को उनके दिनों में आगे की ओर नेतृत्व प्रदान करने पर थी।

जैसा कि हमने अभी अभी देखा, कि मूसा ने उसके पहली पीढ़ी के वृतान्त को दूसरी पीढ़ी के लिए पृष्ठिभूमियों, आदर्शों और प्रतिछाया के रूप में कार्य करने के लिए आकार दिया। उसने ऐसा परमेश्वर की सेवा में उन्हें मार्गदर्शन देने के लिए किया। परन्तु यह सब कुछ हमें निर्गमन के मूल अर्थ के हमारे सार के तीसरे, और कदाचित् सबसे महत्वपूर्ण तत्व की ओर ले आता है। निर्गमन की पुस्तक मूल रूप से मूसा को निर्गमन की पहली पीढ़ी को दूसरी पीढ़ी के लिए यह दिशा निर्देश देने के लिए ईश्वरीय-नियुक्त अधिकारी ठहराती है कि वह मूसा के स्थाई अधिकार को उनके जीवनों में स्वीकार करें।

अब यह उल्लेख करना अति महत्वपूर्ण है कि हारून अकसर निर्गमन की पुस्तक में मूसा के साथ में प्रगट होता है। परन्तु यहाँ तक जब हारून को इसमें सम्मिलित किया गया है, निर्गमन का प्रत्येक सारगर्भित अंश दूसरी पीढ़ी को मूसा का निरन्तर उनके ऊपर अधिकार होने की पुष्टि की बुलाहट देता है। उन्हें मूसा के धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों, उसके नैतिक सिद्धान्तों, राष्ट्रीय नीतियों और ऐसी ही अन्य बातों के अधीन होना था। बाद में इस अध्याय में, हम कुछ विस्तार से देखेंगे कि कैसे यह विषय इसमें व्यापक स्वरूप में पाया जाता है। परन्तु, इस स्थान पर हम संक्षेप में इस पुस्तक के केवल दो ही तरीकों का उल्लेख करेंगे जो मूसा की महत्वपूर्णता और इस्राएल के ऊपर उसके अधिकार के होने के ऊपर जोर देते हैं।

प्रथम, यह देखना कठिन नहीं है कि मूसा निर्गमन के नाटक में एक केन्द्रीय स्थान को पाता है। यह सुनिश्चित हो, कि निर्गमन के पहले दो अध्याय तुरन्त मूसा का परिचय नहीं देते हैं। परन्तु जब हम निर्गमन 2:10 में उसके नाम को पाते हैं, वह सब जो इस पुस्तक में घटित होता है किसी तरह से स्पष्ट रूप से मूसा के साथ बन्धा हुआ है। जब परमेश्वर उसके लोगों को मिस्र से छुड़ाने के लिए तैयार था, तब उसने मूसा को बुलाया। मूसा ने मिस्रियों के विरूद्ध प्रत्येक आश्चर्यजनक निर्णय के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। समुद्र का दो भागों में विभाजित होना तब घटित हुआ जब मूसा ने परमेश्वर के आदेश का पालन किया और अपने हाथ को पानी के ऊपर फैला दिया था। मूसा ने इस्राएल के एक प्रधान के रूप में सेवा की जब परमेश्वर इस जाति को मिस्र से निकाल कर सीनै पर्वत की ओर नेतृत्व कर रहा था। परमेश्वर ने उसकी वाचा को मूसा के द्वारा इस्राएल के साथ स्थापित की। मूसा ने परमेश्वर के बदले में व्यवस्था की पट्टियों और वाचा की पुस्तक को उन्हें दिया। परमेश्वर ने मूसा को मिलाप वाले तम्बू को बनाने के लिए निर्देश दिए। मूसा ने परमेश्वर की सेवा सीनै पर्वत की तराई में इस्राएल की मूर्तिपूजा की संकटावस्था के समय की। और मूसा ने मिलाप वाले तम्बू अर्थात् निवासस्थान के निर्माण में मार्गदर्शन दिया।

दूसरा, निर्गमन की पुस्तक इस्राएल के ऊपर मूसा के अधिकार की झलकियों की पुनरावृत्ति है। यह पुस्तक इस सच्चाई के साथ कार्य करती है कि इस्राएलियों ने अगुवे के रूप में मूसा के अधिकार पर निर्गमन 2:14; 5:21; 15:24; 16:2 और 3; और 17:2 जैस प्रसंगों में प्रश्न किया था। परन्तु अन्य समयों पर, इस्राएलियों ने मूसा के अधिकार को निर्गमन 4:31; और 20:19 जैसे संदर्भों में स्वीकार किया है। और हम परमेश्वर के आश्वासन को पढ़ते हैं, कि उसने स्वयं मूसा को इस्राएल के ऊपर एक अधिकारिक अगुवे के रूप में निर्गमन 6:1-8 और 10:13; 24:2; और 34:1-4 जैसे संदर्भों में स्थापित किया है। बस केवल एक उदाहरण के रूप में, सुनिए निर्गमन 19:9 को, जहाँ पर परमेश्वर ने आने वाले ईशदर्शन, या ईश्वरीय प्रगटीकरण का विवरण सीनै पर्वत के ऊपर मूसा के साथ किया है:

> **मैं बादल के अंधियारे में होकर तेरे पास आता हूँ, इसलिये कि जब मैं तुझ से बातें करूँ तब वे लोग सुनें, और सदा तुझ पर विश्वास करें। (निर्गमन 19:9)।**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

जैसा कि यह संदर्भ संकेत देता है, परमेश्वर सीनै पर्वत के ऊपर "बादल के अंधियारे" में प्रगट हुआ ताकि जब इस्राएली यह सुने कि परमेश्वर मूसा से बातें कर रहा था तो वे "सदा तुझ [मूसा] पर विश्वास" कर सकें। जैसा कि हम यहाँ पर देखते हैं, यह वचन उस सबसे प्रमुख कारण की ओर ध्यानाकर्षित करता है जिसके कारण निर्गमन की पुस्तक लिखी गई थी। निर्गमन की पुस्तक इस्राएलियों के ऊपर मूसा के स्थाई अधिकार को सही ठहराती है।

> **जब सुसमाचारवादी निर्गमन जैसी पुस्तकों का अध्ययन करते हैं, और इसी कारण से, किसी अन्य पुस्तक का भी, तो उन सब की स्वाभाविक प्रवृत्ति ईश्वरीयकेन्द्रित होने की होती है और मेरा ऐसा कहने का तात्पर्य यह है कि सब कुछ परमेश्वर के चारों ओर केन्द्रित है और यह कहना सही है कि प्रत्येक पुस्तक और प्रत्येक पुस्तक का प्रत्येक पहलू परमेश्वर के *बारे* में है। परन्तु वास्तविकता में, जब आप निर्गमन की पुस्तक को देखते हैं, तब आप इस तरह के प्रभाव को नहीं पाते हैं। परमेश्वर महत्वपूर्ण है, और कई पहलूओं में, परमेश्वर ही मुख्य पात्र है, कम से कम इस अर्थ में कि वह इतिहास को नियंत्रण रखता और इस पर कार्य करता जिसके बारे में निर्गमन की पुस्तक बात करती है; वह ही जो इस्राएल को मिस्र से छुटकारा देता है; वह ही है जो व्यवस्था देता है; वह ही है जो निवासस्थान को देता है। परन्तु उसी समय, जब आप इसके साहित्य चित्रण को देखते हैं जो निर्गमन की पुस्तक के इन घटनाओं का विवरण देते हैं, तो आप क्या पाते हैं कि कुछ ऐसा है जो सबसे पहले आश्चर्यचकित करने वाला दिखाई दे सकता है, परन्तु मैं सोचता हूँ कि यह सत्य है, और यह एक विकल्प के साथ है, कि परमेश्वर निर्गमन की पुस्तक में मूसा के द्वारा कार्य करने को छोड़कर कुछ और नहीं करता है। और केवल एक ही बात जिसे परमेश्वर स्पष्ट रूप से मूसा से अलग होकर निर्गमन की पुस्तक में करता है वह यह है कि जब वह प्रथम अध्याय में दाइयों को आशीष देता है। और इस तरह से, हम जो कुछ निर्गमन की इस पुस्तक में पाते हैं वह यह है कि परमेश्वर प्रकट होता है और वह इस्राएल के लिए कार्य करता है, परन्तु मूसा ठीक वही पर है, क्योंकि वह ऐसा साधन है जिसके द्वारा परमेश्वर इसे कर रहा है। और इसका कारण यह है कि क्योंकि मूसा और उसका जीवन बस खत्म होने वाले थे, और मूसा इस्राएल को छोड़ने वाला था, परन्तु परमेश्वर इस्राएल को छोड़ने वाला नहीं था। और इस तरह से वास्तविकता यह है कि जैसा कि आप निर्गमन की पुस्तक में पढ़ते हैं, आप जिन बातों को अध्ययन कर रहे हैं वह ऐसी पुस्तक है जिसे मोआब की तराईयों में पूरा किया गया है, इस तथ्य का अध्ययन कर रहे हैं कि मूसा इस्राएल को छोड़ने वाला था। और इन सब का परिणाम यह था, कि जब हम निर्गमन की इस पुस्तक को पढ़ते हैं, तो इस्राएल इस तरह के प्रश्नों को पूछ रहा है: अब हमारा मार्गदर्शन कौन करेगा? कैसे उन्हें हमारा मार्गदर्शन करना चाहिए? वे कौन सी प्राथमिकताएँ हैं जो हमारे पास में होनी चाहिए? किस तरह का अधिकार है जिसका अनुसरण हमें हमारे दिनों में करना चाहिए जिसे मूसा अब छोड़ने वाला है? और निर्गमन की पुस्तक इसी तरह के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए रूपरेखित की गई है। सच्चाई तो यह है कि परमेश्वर ने इस्राएल को मिस्र में छुटकारा दिया, अपितु उसने उन्हें मूसा के द्वारा मिस्र में छुटकारा दिया। हाँ, परमेश्वर ने इस्राएल को व्यवस्था दी, अपितु परमेश्वर ने मूसा के द्वारा दी। हाँ, परमेश्वर ने निवासस्थान, युद्ध के पवित्र तम्बू को दिया, परन्तु इसने इसे मूसा के द्वारा दिया। और निर्गमन की पुस्तक में यही महत्व की बात है। और इसलिए, निर्गमन की पुस्तक दूसरी पीढ़ी के लिए मूसा के अधिकार को सही उन कहानियों को बताने के द्वारा ठहराती है जो पहली पीढ़ी के साथ घटती हुई और कैसे मूसा को परमेश्वर ने उसके लोगों के सामने उँचा किया और क्योंकि उसके उँचे किए जाने के कारण, मूसा को दूसरी पीढ़ी में उँचा किया जाना चाहिए था, यद्यपि वह मरने पर था। - डॉ. रिचर्ड एल. प्रॉट, जूनियर**

अब क्योंकि हमने निर्गमन के ग्रन्थकार, अवसर और मूल अर्थ के सम्बन्ध में कुछ आरम्भिक सोचविचारों या सरोकारों को स्पर्श कर लिया है, इसलिए हमें इसके आधुनिक उपयोग के ऊपर कुछ टिप्पणियों को देना चाहिए। कैसे इस पुस्तक को आज के मसीह के अनुयायियों के ऊपर लागू किया जा सकता है?

आधुनिक उपयोग

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

निर्गमन जैसी एक जटिल पुस्तक को आधुनिक जीवन में असँख्य तरीकों से लागू किया जा सकता है। हम इसे जानते हैं क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति विशेष है और भिन्न परिस्थितियों का सामना करता है। और हम इस अध्याय में बाद में आधुनिक उपयोगों के ऊपर अधिक सावधानी से देखेंगे। परन्तु इस स्थान पर, कुछ सामान्य दृष्टिकोणों के ऊपर ध्यान देना सहायतापूर्ण होगा जिसे हमें सदैव हमारे ध्यान में रखना चाहिए जब हम निर्गमन को हमारे आज के जीवनों में लागू करते हैं।

मसीह के अनुयायी होने के नाते, हम जानते हैं कि निर्गमन की पुस्तक हम पर लागू होती है क्योंकि यह परमेश्वर का वचन है। परन्तु हमारे और मूल पाठकों के मध्य में विशेष भिन्नताएँ पाई जाती हैं। और इसी कारण से, सदैव आधुनिक उपयोग के लिए हमें मार्गदर्शन पाने के लिए नए नियम की ओर मुड़ना चाहिए। नया नियम हमें निर्गमन को लगभग 240 बार इसका उल्लेख या इसकी ओर संकेत करते हुए करता है। परन्तु नए नियम का एक संदर्भ विशेष रूप से सहायतापूर्ण हैं। सुनिए 1 कुरिन्थियों 10:1-5 को जहाँ पर प्रेरित पौलुस ने ऐसे लिखा कि:

> **हमारे सब बापदादे बादल के नीचे थे... और सब के सब समुद्र के बीच से पार हो गए; और सब ने बादल में और समुद्र में, मूसा का बपतिस्मा लिया। और सब ने एक ही आत्मिक भोजन किया; और सब ने एक ही आत्मिक जल पीया, क्योंकि वे उस आत्मिक चटान से पीते थे, जो उन के साथ- साथ चलती थी, और वह चटान मसीह था। परन्तु परमेश्वर उन में के बहुतों से प्रसन्न न हुआ, इसलिये वे जंगल में ढेर हो गए (1 कुरिन्थियों 10:1-5)।**

जैसा कि हम यहाँ पर देखते हैं, कि पौलुस कई घटनाओं का उल्लेख करता है जो कि निर्गमन की पुस्तक में घटित हुई थी। परन्तु अब 1 कुरिन्थियों 10:11 को देखें, जैसा कि संदर्भ निरन्तर चल रहा है:

> **परन्तु ये सब बातें, जो उन पर पड़ीं, दृष्टान्त की रीति पर थी; और वे हमारी चेतावनी के लिये जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं लिखी गई हैं (1 कुरिन्थियों 10:11)।**

एक साथ, ये वचन स्पष्ट रूप से मसीह के अनुयायियों के लिए निर्गमन की पुस्तक की प्रासंगिकता की पुष्टि करती हैं। जैसा कि पौलुस लिखता है कि "ये बातें जो उन पर पड़ीं, दृष्टान्त की रीति पर थी।" और वे "हमारी चेतावनी के लिये लिखी गई हैं।" पौलुस के शब्द यहाँ पर हमें यह देखने में सहायता करते हैं कि निर्गमन न केवल अतीत के "*वह* संसार" और न केवल "*उनके* संसार" के लिखी गई थी, अपितु यह "*हमारे* संसार" के लिए भी लिखी गई है। इस अध्याय के संदर्भ में इसे इस तरह से लिखना होगा, कि निर्गमन की पुस्तक केवल मूल पाठकों को मार्गदर्शन देने के लिए नहीं लिखी गई थी। इसकी मंशा *हम* मसीह के अनुयायियों "के लिए भी" थी।

सुनिए कैसे प्रेरित मसीह के अनुयायियों के संसार का विवरण देता है। हम वह लोग हैं "जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं।" शब्द "अन्तिम" का अनुवाद यूनानी शब्द *τέλος* (*टिलोस*),किया गया है, जिसका निरन्तर अनुवाद "अन्त" या "पूर्णता" में किया गया है। मसीही विश्वासी ऐसे समय में रहते हैं जब परमेश्वर की इतिहास के प्रति योजना मसीह में अन्त या पूर्णता की ओर पहुँच रही है। सामान्य धर्मवैज्ञानिक शब्दावलियों में, हम जो यीशु में जीवन यापन कर रहे हैं "युगान्त" या इतिहास के "अन्तिम" समय में रह रहे हैं।

जो कुछ पौलुस के विचार में था उसे समझने के लिए, हमें यह जानना आवश्यक है कि जब हम मसीह में उसके बचाने वाले अनुग्रह तक आते हैं, तो हम यात्रा का हिस्सा बन जाते हैं। हम वास्तव में मूसा के "अन्तिम दिनों" और इस्राएल की गुलामी से यात्रा और मिस्र के अत्याचार से स्वतंत्रता और परमेश्वर की प्रतिज्ञात् भूमि की आशीषों में प्रवेश करते हैं।

अब सम्पूर्ण रूप में नया नियम यह शिक्षा देता है कि युगान्त के समय का युग, या मसीह में अन्तिम दिन, तीन अवस्थाओं में खुलते चले जाएंगे। इस कारण, बाइबल आधारित दृष्टिकोणों के अनुसार, मूसा और इस्राएल की यात्रा का यह अन्तिम चरण मसीह के द्वारा उसकी पार्थिव सेवकाई के समय उसके राज्य के उदघाटन के समय आरम्भ हुआ। और निर्गमन की पुस्तक में मूसा और इस्राएल की यात्रा आगे की ओर इन अन्तिम दिनों में बढ़ती है

जब हम मसीह के साथ उसके राज्य की निरन्तरता के समय एकता के साथ पूरे कलीसियाई इतिहास में जीवन यापन करते हैं। और अन्त में, बिल्कल वैसे ही जैसे मूसा और इस्राएल मिस्र से प्रतिज्ञात् भूमि की ओर यात्रा करते हैं, अन्तिम दिनों में मसीह में हमारी यात्रा का अन्त उसके राज्य की पराकाष्ठा के साथ होगा, जब उसका महिमामयी पुनरागमन होगा, हम नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में प्रवेश करेंगे।

इस कारण, जैसा कि 1 कुरिन्थियों 10 संकेत देता है, हमें निर्गमन के प्रत्येक विषय को मसीह में उसके राज्य, निरन्तरता और पराकाष्ठा के अन्तिम दिनों के आलोक में लागू करने चाहिए।

हम इन सम्पर्कों को कई तरीकों से निर्मित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, निर्गमन हमें बताता है कि इस्राएल सीनै पर्वत पर मूसा के द्वारा परमेश्वर के साथ वाचा में प्रवेश किया। इस तरह से, मसीही विश्वासी मसीह में नई वाचा में प्रवेश करते हैं। परन्तु इस नई वाचा का आरम्भ मसीह के प्रथम आगमन के साथ हुआ; यह अब निरन्तर चल रही है; और यह मसीह के दूसरे आगमन के समय पूरी हो जाएगी।

एक और उदाहरण के रूप में, निर्गमन मूसा के दिनों में निवासस्थान में परमेश्वर की उपस्थिति का वर्णन करती है। नया नियम यह शिक्षा देता है कि परमेश्वर की उपस्थिति मसीह में और भी महान् थी। स्वयं यीशु परमेश्वर की उपस्थिति था जो उसके राज्य के उदघाटन के साथ हमारे साथ रहा । राज्य की निरन्तरता के समय, अब पवित्र आत्मा व्यक्तिगत् विश्वासियों और सामूहिक रूप से कलीसिया में वास करता है। और इतिहास की पराकाष्ठा के समय, परमेश्वर की महिमा सब कुछ में भर जाएगी जब नई सृष्टि को पवित्र वास स्थान बना दिया जाएगा।

निर्गमन मूसा के दिनों में उसके शत्रुओं की पराजय को भी प्रगट करती है। और नया नियम यह शिक्षा देता है कि मसीह पाप और मृत्यु को हरा देता है। मसीह ने इस पराजय के अन्तिम चरण को उसके पहले आगमन में परमेश्वर के महान् योद्धा के रूप में आरम्भ कर दिया है। कलीसिया अब मसीह का अनुसरण उसकी सेना के रूप में आत्मिक युद्ध में परमेश्वर के सारे हथियारों को धारण करके करती है। और जब वह अपनी महिमा में पुन: आएगा, मसीह परमेश्वर के शत्रुओं के विरूद्ध उसके महान् लौकिक युद्ध को पूर्ण कर देगा।

इसके अतिरिक्त, निर्गमन में, इस्राएली प्रतिज्ञात् भूमि में परमेश्वर से उनके उत्तराधिकार की प्राप्ति के लिए आगे की ओर बढ़े थे। यह परमेश्वर के शासन को सम्पूर्ण पृथ्वी पर फैलाने के लिए उनकी ओर से उठाया हुआ पहला कदम था। नया नियम यह शिक्षा देता है कि मसीही विश्वासी मसीह में उनके उत्तराधिकार को प्राप्त करते हैं। स्वयं मसीह ने उसके उत्तराधिकार को उसके राज्य के उदघाटन में सुरक्षित किया। आज के मसीही विश्वासी होने के नाते हम निरन्तर पवित्र आत्मा में अपने उत्तराधिकार के ब्याने के भुगतान को दिए जाने का आनन्द उठाते हैं। और जब मसीह का पुनरागमन होगा – और हम उसमें उठा लिए जाएंगे – तो हम सब वस्तुओं के उत्तराधिकारी हो जाएंगे।

यह और अन्य व्यापक सम्पर्क स्पष्ट करते हैं कि कैसे निर्गमन मुख्य रूप से मूसा के स्थाई अधिकार को अभी भी मसीह में हम पर लागू करने की ओर केन्द्रित हैं। संक्षेप में, निर्गमन ने इसके मूल पाठकों को मूसा के अधिकार के प्रति जो कुछ परमेश्वर उनके दिनों में कर रहा था, के आलोक में विश्वासयोग्य बने रहने के लिए बुलाहट दी। और निर्गमन अब हमें मूसा के अधिकार के प्रति वह सब जिसे परमेश्वर ने पूरा किया, पूरा कर रहा है, और मसीह में पूरा करेगा, के आलोक में विश्वासयोग्य बने रहने की बुलाहट देता है।

अब क्योंकि हमने निर्गमन की पुस्तक के कुछ आरम्भिक सोचविचारों या सरोकारों को स्पर्श कर लिया है, इसिलए हमें इस अध्याय के हमारे दूसरे मुख्य विषय: पुस्तक की सरंचना और विषयवस्तु की ओर मुड़ना चाहिए।

सरंचना एवं विषय-वस्तु

निर्गमन की पुस्तक कई विभिन्न चरित्रों, संदर्भों और घटनाओं से मिलकर चालीस अध्याय में निर्मित हुई है। हम इसमें साहित्य के विभिन्न प्रकारों जैसे कथाएँ, गीत, वशांवली, सूची, व्यवस्थाएँ, भाषण, प्रार्थनाएँ और निर्देशों को पाते हैं। और ये जटिलताएँ कई बार मुख्य विभाजनों, भागों और पुस्तक के छोटे खण्डों में भिन्नता को पाने में कठिनाई को उत्पन्न करती हैं। इसलिए यह कहना उचित है कि निर्गमन को कई तरीकों से रूपरेखित किया

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

जा सकता है। परन्तु जब हम पुस्तक के मूल उद्देश्य को स्मरण रखते तो इस पुस्तक की मूल सरंचना और विषयवस्तु को समझना कठिन नहीं होता हैं।

निर्गमन की पुस्तक के दो भाग हैं। पहला आधा हिस्सा, 1:1-18:27 में, मूसा और इस्राएल का मिस्र से सीनै पर्वत की ओर छुटकारे पर ध्यान केन्द्रित करता है। दूसरा आधा हिस्सा, 19:1-40:38 में सीनै पर्वत पर मूसा और इस्राएल का कनान की ओर जाने की तैयारी का निपटारा करता है।

हम विशेष रूप से यह देखेंगे कि कैसे यह दोनों मुख्य भाग मूसा के निर्गमन के समय की दूसरी पीढ़ी के ऊपर स्थाई अधिकार को बनाए रखने के लिए ध्यानकेन्द्रित करते हैं। आइए मिस्र से सीनै पर्वत की ओर मूसा और इस्राएल के छुटकारे से आरम्भ करें।

मिस्र से छुटकारा (निर्गमन 1:1-18:27)

मूसा और इस्राएलियों की मिस्र से छुटकारा इस्राएल के छुटकारे से *पहले* मूसा के अधिकार के ऊपर ध्यान केन्द्रित होने से आरम्भ होता है। हम निर्गमन 1:1-4:31 में इसे पाते हैं। तब 5:1-18:27 में, मूसा इस्राएल के छुटकारे की घटनाओं के *ऊपर* ध्यान लगाता है। आइए सबसे पहले यह देखे कि निर्गमन इस्राएल के छुटकारे से पहले की घटनाओं के बारे में क्या कहता है।

छुटकारे से पहले (1:1-4:31)

इस्राएल के छुटकारे से पहले की घटनाओं को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम, मूसा का जन्म, और उसका पालन पोषण 1:1 में आरम्भ होता है और 2:10 तक चलता रहता है। इसके पश्चात्, हम मूसा के इस्राएल के ऊपर नेतृत्व देने के लिए 2:11-4:31 में पढ़ते हैं। हम मूसा के जन्म और उसके पालन पोषण की कहानी के साथ आरम्भ करेंगे।

जन्म और पालन पोषण (1:1-2:10) – ये वचन उस किसी भी आपत्ति के बारे में बोलते हैं जो कि मूसा के अधिकार के विरुद्ध उठ खड़ी हो सकती थी क्योंकि मूसा ने उसके जवानी के समय को मिस्र के दरबार में व्यतीत किया था। जैसा कि कहानी का आरम्भ होता है, फिरौन ने इस्राएल की बढ़ती हुई गिनती के कारण विद्रोह की आशंका को पाया। उसने इस्राएल की जनसँख्या को नियंत्रण करने के लिए धूर्तता भरी तीन योजनाओं को संचालित किया। परन्तु कठोर परिश्रम का उसका भार असफल हो गया। धाइयों को इस्राएलियों के लड़कों को उनके जन्म के समय ही मारने का आदेश असफल हो गया। और इन सबसे अधिक महत्वपूर्ण, उसका इस्राएली लड़कों को नील नदी में डूबो कर मार देने का आदेश भी असफल हो गया।

इन पूरे वृतान्तों में विडंबना चलती रहती है। परन्तु सबसे बड़ी विडंबना उस समय प्रगट होती है जब फिरौन की पुत्री मूसा को नील नदी से बचाने के द्वारा उसकी योजना को असफल कर देती है। तब 2:10 में, फिरौन की पुत्री मूसा को उसका नाम यह कहते हुए देती है कि, "मैंने इसे पानी में से बाहर निकाला।" अब मिस्र में, "मूसा" का साधारण अर्थ "पुत्र" से है, जो अदिकांश लोगों को यह संकेत देता है कि मूसा राजकीय दरबार का एक सदस्य था। परन्तु फिरौन की पुत्री ने यह स्पष्ट किया है कि उसने इस नाम को इसलिए चुना क्योंकि यह इब्रानी भाषा की क्रिया में מָשָׁה *(माशै)*, अर्थ "बाहर निकाला" हुआ है। इस तरह से विश्वासयोग्य इस्राएलियों के कानों में, मूसा का नाम यह संकेत नहीं देता है कि वह फिरौन का पुत्र था। इसकी अपेक्षा, मूसा के नाम ने फिरौन का यह स्मरण दिलाते हुए मजाक उड़ाया कि कैसे फिरौन के नुक्सान पहुँचाने के प्रयास असफल हो गए थे।

नेतृत्व के लिए उठना (2:11-4:31) - मिस्र में से इस्राएल के छुटकारे की घटनाओं की कथा इसके मूसा के जन्म के पश्चात् से इस्राएल के ऊपर 2:11-4:31 में मूसा के नेतृत्व के अधीन होने के बारे में उठ खड़े होते हैं।

निर्गमन 2:14 में, एक इस्राएली गुलामी मूसा का सामना करता है और उससे पूछता है कि, "किसने तुझे हम लोगों पर हाकिम और न्यायी ठहराया?" यह पूरा खण्ड इस प्रश्न का उत्तर यह व्याख्या देते हुए करता है कि कैसे मूसा इस्राएल का अधिकारिक अगुवा बन गया। इस्राएलियों के प्रश्न का उत्तर छ-चरणों के व्यतिक्रम, जो कि एक

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

ऐसी साहित्यिक संरचना है जिसमें खण्ड एक मुख्य बात के पहले या पश्चात् आपस में एक दूसरे के प्रति समान्तर या सन्तुलन में रहते हैं।

प्रथम, मूसा का निर्गमन 2:11-15 में मिस्र से भागना मूसा को इस्राएल के अगुवे के रूप में यह कहते हुए सही ठहराता है कि वह मिस्र से इसलिए भाग गया था क्योंकि उसने एक मिस्री को एक इस्राएली गुलाम को बचाने के लिए मार दिया था।

दूसरा, मूसा मिद्यानियों के परिवार के साथ 2:16-22 में जुड़ गया। वचन 22 ध्यान देता है कि मूसा के पुत्र का नाम "गेर्शोम" था। जैसा कि यह संदर्भ विवरण देता है, यह नाम इब्रानी भाषा की अभिव्यक्ति גֵּר שָׁם (गेर शाम), जिसका अर्थ "साथ में यात्रा करने वाला" होता को देता है। यह नाम संकेत देता है कि मूसा ने स्वयं को मिद्यानियों के मध्य में एक परदेशी के रूप में समझा। दूसरे शब्दों में, उसने सच्चे इस्राएली की पहचान को कभी नहीं खोया था।

तीसरा खण्ड, निर्गमन 2:23-25 में, परमेश्वर की उसकी वाचा के प्रति स्मरण किए जाने की ओर संकेत करता है। इस भाग में, इस्राएलियों ने सहायता के लिए पुकारा, और परमेश्वर ने इस्राएलियों के कुलपतियों को दी हुई उसकी प्रतिज्ञा को स्मरण किया।

चौथा खण्ड पिछले खण्ड का सदृश है। अध्याय 3:1-4:17 हमें परमेश्वर के द्वार जलती हुई झाड़ी में मूसा के नियुक्त किए जाने को बताता है। यहाँ पर, मूसा के अगुवेपन को इस तथ्य के साथ सही ठहराया हुआ है कि परमेश्वर ने इस्राएल के कुलपतियों के साथ बान्धी हुई वाचा को इस्राएलियों को मिस्र में बाहर निकाल कर प्रतिज्ञात् भूमि में लाने के द्वारा स्मरण किया।

पाँचवाँ खण्ड, निर्गमन 4:18-26, मूसा के द्वारा मिद्यानी परिवार के साथ व्यतीत किए हुए समय के सदृश है। यह खण्ड मूसा के मिद्यानी परिवार से प्रस्थान किए जाने का विवरण देता है। यह संदर्भ गेर्शोम के ऊपर ध्यान केन्द्रित करता है क्योंकि मूसा उसका खतना करने में असफल हो गया था। इस खण्ड में, परमेश्वर ने मूसा को उत्पत्ति 17:10-14 में अब्राहम के साथ बान्धी हुई वाचा के अनुसार मारने की धमकी दी। परन्तु यहाँ तक कि यह घटना भी परमेश्वर के द्वारा मूसा के नेतृत्व का समर्थन करती है। हम यह जानते हैं कि क्योंकि परमेश्वर ने दया के साथ प्रतिक्रिया दी, जब मूसा की मिद्यानी पत्नी सिप्पोरा ने गेर्शोम का खतना किया।

और अन्त में, मिस्र से आरम्भ में भागने को मूसा के साथ सन्तुलन, निर्गमन 4:23-31 में मूसा के हारून के साथ मिस्र में आने के विवरण के साथ किया गया है। यहाँ पर भी मूसा का अगुवेपन के लिए उठने को सही ठहराया गया है। 4:31 में, हम शिक्षा पाते हैं कि इस्राएलियों ने परमेश्वर में विश्वास किया और उसकी आराधना की क्योंकि उसने उनके पास मूसा को भेजा था।

> **सुनिए, उन तरीकों को जिनमें हम कहानियों को सुनाते हैं, वह तरीका जिसमें कोई भी कहानी को सुनाता है, वहाँ पर आरम्भ और अन्त होता है, वहाँ पर कोई नायक होता है, वहाँ पर कहानी में मोड़ होते हैं, वहाँ पर कोई खलनायक होता है, और यह सन्तुलित रूप में होती है... इसलिए हमें आश्चर्य नहीं करना चाहिए जब हम बाइबल की कथाओं की सन्तुलित सरंचना के प्रकार को पाते हैं। सच्चाई तो यह है, कि यही वह कुछ है जिसकी हमें बाइबल की कहानी में अपेक्षा करनी चाहिए। बाइबल की कहानी को सुनाने वाले, बाइबल के कथाकार इसकी सामग्री को गढ़ नहीं रहे हैं। वे इसकी सामग्री को जोड़ तोड़ नहीं लगा रहे हैं ताकि वह कलात्मक रूप से कार्य करने लगे; यह बस केवल वह तरीका है जिसमें हमें कहानियों को सुनाना चाहिए और ऐसा ही प्राप्त होने की अपेक्षा करनी चाहिए। और प्राप्त करने की अपेक्षा के समय, यह जानते हुए कि कैसे एक कहानी का कथानक कार्य करता है, हमें इन शब्दों के संदर्भ में हथियार देता है कि क्या देखना चाहिए और किस वस्तु को देखना चाहिए। - डॉ. गोर्डन एच. जान्सटन**

अब क्योंकि हमने मूसा और इस्राएल का मिस्र में से छुटकारे को इस्राएल के छुटकारे से पहले देख लिया है, हमें मूसा के निर्गमन 5:1-18:27 में इस्राएल के छुटकारे के *मध्य* के कार्यों की ओर मुड़ना चाहिए।

छुटकारे के मध्य (5:1-18:27)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

इस्राएल के छुटकारे के मध्य के कार्य मिस्र में उसके समय के साथ आरम्भ होते हैं जो निर्गमन 5:1-13:16 में पाए जाते हैं। इसके पश्चात्, जब हम मूसा के अगुवेपन को मिस्र से सीनै के पर्वत की ओर निर्गमन 13:17 - 18:27 में पाते हैं। आइए मूसा के मिस्र में जाने के समय को देखें।

जन्म के समय (5:1-13:16) – मूसा का मिस्र में व्यतीत किया हुआ समय उन आपत्तियों को उत्तर देती हैं जो मूसा के विरूद्ध उसके मिस्र में असावधानीपूर्ण इस्राएलियों के दुखों में योगदान देने के आरम्भिक प्रयासों के कारण आ सकती थी।

5:1-6:27 में, हम दो समानान्तर दृश्यों को पढ़ते हैं कि दोनों ही इस्राएल के द्वारा मूसा के अगुवेपन को अस्वीकार करते हैं, मूसा का विलाप और परमेश्वर का पुन: आश्वासन। पहला दृश्य 5:1-6:8 में प्रगट होता है जहाँ पर इस्राएलियों ने मूसा को फिरौन को उनके विरूद्ध उत्तेजित करने के लिए अस्वीकार कर दिया। मूसा ने विनम्रता से विलाप किया। और परमेश्वर ने उसे इस्राएल को नेतृत्व देने की उसकी बुलाहट के लिए पुन: आश्वासन दिया।

दूसरा दृश्य 6:9-27 में, उसी ही सदृश पद्धति का अनसुरण करता है। परन्तु इस्राएल के दूसरी बार मूसा को अस्वीकार और मूसा के दूसरी बार विलाप के पश्चात्, परमेश्वर का पुन: आश्वासन वंशावली से आता है। अध्याय 6:13-27 मूसा और हारून के वंश को उनके पूर्वजों लेवी से लेकर हारून के पोते पीनहास की वंशावली तक खोज करती है। इसमें कोई सन्देह नहीं है, कि लेवी, इस्राएल के बारह कुलपतियों में से एक था। और, गिनती 25 और 31 के अनुसार पीनहास ने, इस्राएलियों को परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य सेवकाई के लिए दूसरी पीढ़ी के दिनों में नेतृत्व प्रदान किया। यहाँ पर, परमेश्वर ने दूसरी पीढ़ी को पुन: आश्वासन दिया कि मूसा और हारून सच्चे इस्राएली थे, जो याकूब के गोत्र से निकल कर आए थे। और पीनहास में, वह पहली बार मूसा और हारून की विश्वासयोग्य विरासत को देख सकते थे और अश्वस्त हो सकते थे कि इन मनुष्यों को उनका नेतृत्व करने के लिए परमेश्वर के द्वारा बुलाया गया है।

यह बात हमें मिस्र में मूसा के कार्यों के दूसरे मुख्य भाग: निर्गमन 6:28-13:16 में परमेश्वर का मिस्र के ऊपर आश्चर्यजनक न्याय की ओर ले चलती है। ये अध्याय मूसा के अधिकार को उस महत्वपूर्ण भूमिका की ओर संकेत करते हुए सही ठहराते हैं जिसमें परमेश्वर ने मिस्रियों के विरूद्ध परमेश्वर के अलौकिक कार्यों को प्रगट किया।

6:28-7:13 में सांपों को परिचयात्मक न्याय प्रगट होता है। हारून की लाठी आश्चर्यजनक रूप में साँप में परिवर्तित हो जाती है और परमेश्वर की सामर्थ्य को मिस्र के ऊपर फिरौन के जादूगरों के द्वारा उत्पन्न किए हुए साँपो को निगल जाने के द्वारा प्रकट करती है। इस परिचयात्मक आश्चर्यकम्र के पश्चात्, निर्गमन 7:14-10:29 में श्रृंखला के रूप में नौ न्याय प्रगट होते हैं। ये नौ न्याय समान रूप से तीन श्रृंखला में विभाजित हो जाते हैं, जिनमें से प्रत्येक में मूसा नील नदी के ऊपर फिरौन का सामना करते हुए आरम्भ करता है।

पहली श्रृंखला 7:14-8:19 में चलती है। इसमें पानी को लहू में परिवर्तित करने वाला, भूमि को मेढ़कों के द्वारा भर दिया जाना, और धूल से कुटकियों के उठने का आश्चर्यकम्र सम्मिलित है। दूसरी श्रृंखला 8:20-9:12 में चलती है और डांसों के झुण्ड के द्वारा बीमारी, मिस्रियों के पशुओं, और फोड़ों के द्वारा बीमारी सम्मिलित है। तीसरी श्रृंखला 9:13-10:29 में चलती है जिसमें ओलों की वर्षा, टिड्डुयों का आक्रमण, और अन्धकार सम्मिलित है। इन सभी आश्चर्यजनक न्यायों के ऊपर मूसा की महत्वपूर्ण भूमिका ने इस्राएल के अगुवे के रूप में उसे सही ठहराया है। अन्त में, फसह का अन्तिम न्याय इस खण्ड में 11:1-13:16 के साथ समाप्त होता है। मिस्र में परमेश्वर के द्वारा प्रत्येक पहिलौठे को मार दिए जाने के पश्चात्, फिरौन ने अन्त मे इस्राएलियों को जाने दिया।

इस्राएल के छुटकारे के समय घटित हुई घटनाओं को देख लेने के पश्चात् जो कि मिस्र में घटित हुई थी, हमें अब उन तरीकों की ओर मुड़ना चाहिए जिसमें परमेश्वर ने मूसा के अधिकार को मिस्र से सीनै पर्वत की ओर निर्गमन 13:17-18:22 में भी सही ठहराया है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

पलायन के समय - (13:17-18:22) - अब, कठिनाइयों के बावजूद जिनका सामना इस्राएलियों ने सीनै की ओर पलायन करते हुए अनुभव किया, यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि इस्राएलियों ने मिस्र को बिना किसी तैयारी के नहीं छोड़ा था। निर्गमन 13:18 हमें स्पष्ट रूप से बताता है कि इस्राएलियों ने मिस्र को "युद्ध के लिए शास्त्र धारण" करने के द्वारा छोड़ा था। इस सैन्य विषय के आलोक में, यह पूरा खण्ड अन्य जातियों के साथ संघर्ष, और इस्राएल की सेना के लिए पानी और भोजन की आवश्यकता का चित्रण करता है।

युद्ध के लिए इस्राएलियों की तैयारी चार मुख्य खण्डों में विभाजित है। पहला खण्ड 13:17-15:21 में मूसा के समुद्र के ऊपर अधिकार को सही ठहराते हैं। निर्गमन 14:31 में, इस्राएल के द्वारा सूखी भूमि पर से समूद्र को पार कर लेने के पश्चात्, हम मूसा को सही ठहराने के बारे में ऐसे पढ़ते हैं:

इस्राएलियों ने यहोवा का भय माना और यहोवा पर और उसके दास मूसा पर भी विश्वास किया (निर्गमन 14:31)।

यह वचन बड़ी दृढ़ता के साथ इस खण्ड की मुख्य बातों को प्रस्तुत करता है। इस्राएल की सेना ने "यहोवा परमेश्वर का भय माना और उस पर विश्वास किया।" *और* उन्होंने साथ ही "उसके सेवक मूसा" में भी विश्वास किया। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि निर्गमन का सन्देश मूल पाठकों के लिए स्पष्ट था। उन्हें भी उनके दिनों में परमेश्वर और मूसा में विश्वास करना चाहिए था।

इसके पश्चात्, इस्राएल की सेना निर्गमन 15:22-27 में शूर नाम जंगल की ओर बढ़ चली। शूर के जंगल में लोगों ने मूसा के अधिकार को मूसा के विरुद्ध बुड़बुड़ाने के द्वारा चुनौती दी क्योंकि जिस पानी को उन्होंने पाया था वह पीने योग्य नहीं था। इस तरह से, परमेश्वर ने मूसा को एक अगुवे के रूप में लकड़ी के एक टुकड़े का प्रबन्ध करने के द्वारा जिसने पानी को चंगा कर दिया, ऊँचा किया।

तीसरे खण्ड में, इस्राएली 16:1-36 में पाप के जंगल में पहुँच गए। पाप के जंगल में, इस्राएलियों ने मूसा के नेतृत्व को मूसा और हारून के विरूद्ध एक बार फिर से बुड़बुड़ाने के द्वारा चुनौती दी। परन्तु इस समय, वचन 7 में, मूसा ने जोर दिया कि वे वास्तव में *परमेश्वर* के विरुद्ध बुड़बुड़ा रहे थे। और परमेश्वर ने मूसा को इस्राएलियों के लिए बटेरों और प्रतिदिन मन्ने का भोजन प्रदान करके सही ठहराया।

परमेश्वर मूसा के अधिकार को जंगल में लोगों की आश्यकताओं को प्रदान करने के द्वारा पुष्टि करता है। यद्यपि वे मूसा और प्रभु के विरूद्ध बुड़बुड़ाए थे, परमेश्वर तौभी दयालुता से भर कर उनके लिए चट्टान से पानी का प्रबन्ध करता है, वह उन्हें स्वर्ग से मन्ना प्रदान करता है, और यह सब कुछ न केवल पिता की ओर से की जाने वाले देखभाल के द्वारा होता है, अपितु साथ ही यह पुष्टि करता है कि मूसा ही सचमुच वह व्यक्ति है जिसे उसने भेजा था...हम अकसर मसीही विश्वासी होने के नाते एक व्यक्ति में विश्वास करने, एक व्यक्ति में भरोसा रखने के बारे में नहीं सोचते हैं, परन्तु यहाँ पर वह घटना है जिसमें लोगों को वास्तव में उनके विश्वास को न केवल प्रभु में रखने की बुलाहट दी गई अपितु प्रभु के पात्र और इस घटना में प्रभु के प्रतिनिधि मूसा में भी रखने की। हमने इसे लाल समुद्र की पृष्ठभूमि में भी देखा, जब परमेश्वर ने मिस्र की सेना के ऊपर उन्हें पराक्रमी विजय को लाल समुद्र को पार करते हुए प्रदान किया था। वह समुद्र के उस पार थे, यह ऐसा कहता है कि लोगों ने आनन्द मनाया और परमेश्वर की स्तुति की और उन्होंने अपने विश्वास को परमेश्वर और मूसा में रखा।

- प्रोफेसर थॉमस ऐगर

चौथा और अन्तिम स्थान जहाँ पर इस्राएली आगे की ओर बढ़े निर्गमन 17:1-18:27 में रपीदीम था। यह अपेक्षाकृत लम्बा खण्ड तीन वृतान्तों में विभाजित होता है। प्रथम, निर्गमन 17:1-7 में, लोगों ने परमेश्वर की परीक्षा की जब वे पानी के बारे में एक बार फिर से कुड़कुड़ाए। इसकी प्रतिक्रिया में, परमेश्वर ने मूसा को वृद्ध लोगों को सीनै पर्वत पर ले जाने का आदेश दिया। वहाँ पर, परमेश्वर ने मूसा को एक चट्टान को मारने के लिए कहा, और इससे पानी बाहर आ गया। तथापि, इस आश्चर्यकम्र के बावजूद, इस्राएलियों ने परमेश्वर के साथ और भी ज्यादा झगड़ा किया। उन्होंने बेखटके वचन 7 में यह कहा कि, "क्या यहोवा हमारे बीच में है या नहीं?" अगले दो वृतान्त इस विषय को समाप्त कर देते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

अब, यह समझने के लिए कैसे यह वृतान्त प्रश्न का उत्तर देते हैं, हमें कुछ ऐसा स्मरण रखना चाहिए जिसे इस्राएली अच्छी तरह से जानते थे। उत्पत्ति 12:3 में, परमेश्वर ने अब्राहम को प्रतिज्ञा दी थी कि वह उन सभों को आशीषित करेगा जो उसको आशीष देंगे और उन सभों को श्राप देगा जो उसे श्राप देंगे। इस कारण इस प्रतिज्ञा के विचार के साथ, निर्गमन 17:8-16 में, जब अमालेकियों ने इस्राएलियों के ऊपर आक्रमण किया, तो परमेश्वर ने उन्हें हरा दिया और अमालेकियों को शाप दिया।

इस खण्ड, 18:1-27 के अन्तिम कड़ी में, यित्रो मूसा के जीवन में शान्ति लेकर आता है। क्योंकि यित्रो ने इस्राएलियों को आशीषित किया, परमेश्वर के द्वारा यित्रो को आशीषित किया गया। इन दो घटनाओं ने सन्देह से परे यह प्रदर्शित किया कि परमेश्वर इस्राएलियों के मध्य में ठीक वैसे ही था जैसे उसने अब्राहम को प्रतिज्ञा दी थी। जब इस्राएल की सेना मूसा ने अनुसरण किया, तो उन्होंने परमेश्वर की सामर्थ्यशाली उपस्थिति की सुरक्षा को प्राप्त किया।

अभी तक हमने निर्गमन की संरचना और विषय-वस्तु को देखा जो मूसा के अधिकार को मूसा और मिस्र से सीनै पर्वत की ओर जाने के लिए इस्राएल के छुटकारे के ऊपर ध्यान केन्द्रित करती है। अब हमें निर्गमन 19:1-40:38 में पुस्तक के दूसरे आधे हिस्से की ओर मुड़ना चाहिए। ये अध्याय मूसा के अधिकार को कनान से सीनै पर्वत के लिए मूसा और इस्राएल की तैयार के लिए की ओर मुड़ने को प्रदर्शित करती है।

कनान के लिए तैयारी (निर्गमन 19:1-40:38)

बाइबल के अधिकांश विद्यार्थी मूसा और इस्रालियों के साथ क्या कुछ घटित हुआ को जानते हैं जब उन्होंने सीनै पर्वत की तराई में अपने तम्बूओं को खड़ा किया था – कैसे परमेश्वर ने उन्हें अपनी व्यवस्था और अपना मिलाप का तम्बू दिया था। परन्तु निर्गमन हमें केवल कुछ ही बातों के बारे में कहती है जो वास्तव में वहाँ पर घटित हुई थी। हम जानते हैं क्योंकि लैव्यव्यवस्था की पुस्तक हमें अन्य कई बातों के वहाँ पर उसी समय घटित होने के बारे में बताती है। इसी कारण, हम जानते हैं कि ये अध्याय उच्च चयनात्मक हैं। इनका निर्माण इन घटनाओं पर कुछ निश्चित दृष्टिकोणों के महत्व को पाने के लिए किया गया है। और जैसा कि हम देखेंगे, वे विशेष रूप से इस बात पर ध्यान देते हैं कि कैसे परमेश्वर ने मूसा के अधिकार को सीनै पर्वत पर इस्राएल को प्रदर्शित किया।

कनान के लिए मूसा और इस्राएलियों की तैयारी दो मुख्य भागों में पाई जाती है। पहला भाग निर्गमन 19:1-24:11 में प्रगट होता है और मूसा के अधिकार और इस्राएल की वाचा का निपटारा करता है। दूसरा भाग, 24:12-40:38 में पाया जाता है, जो मूसा के अधिकार और इस्राएल के मिलाप के तम्बू के ऊपर जोर देता है। आईए इस्राएल की वाचा को देखें।

इस्राएल की वाचा (19:1-24:11)

अब, इस्राएल की वाचा का विवरण निर्गमन के मूल पाठकों को एक महत्वपूर्ण प्रश्न: क्यों निर्गमन की दूसरी पीढ़ी को वाचाई व्यवस्था के अधीन होना चाहिए था जिन्हें उनके पूर्वजों ने सीनै पर्वत के ऊपर मूसा से प्राप्त की थी, का उत्तर देता है? क्यों उन्हें एक भिन्न मार्ग के ऊपर चलना था?

इस्राएल की वाचा के लिए समर्पित अध्याय इस प्रश्न का उत्तर चार चरणों में देते हैं। प्रथम, निर्गमन 19:1 से लेकर वचन 8 के आरम्भ तक, हम इस्राएल की वाचा का परमेश्वर के साथ आरम्भ होने को पाते हैं।

वाचा का दीक्षाकरण (19:1-8अ) – ये वचन मूसा की वाचा के मूल शब्दावलियों को देते हैं: परमेश्वर ने इस्राएलियों को परोपकारिता दिखाई थी; वह उनसे अपने प्रति निष्ठा की मांग करता है; वे तभी आशीष पाएगें जब वे उसकी आज्ञा का पालन करते हैं। निर्गमन 19:8 इस वृतान्त को इस्राएलियों के उत्साह और सर्वसम्मति वाली प्रतिक्रिया के साथ समाप्त होते हैं कि: "जो कुछ यहोवा ने कहा है वह सब हम नित करेंगे।" और इसमें कोई सन्देह नहीं है कि यह बात बिल्कुल स्पष्ट थी; निर्गमन की दूसरी-पीढ़ी के पाठकों को अपने पूर्वजों का अनसुरण करना था। उन्हें उसे जैसे ही उत्साह के साथ मूसा के द्वारा आई वाचा के प्रति स्वयं को पुन: समर्पित करना चाहिए था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

इस्राएल का मूसा में विश्वास (19:8ब-20:20) – मूसा के अधिकार और इस्राएल की वाचा के ऊपर दूसरा चरण मूसा में इस्राएल के विश्वास के ऊपर केन्द्रित है जिसमें वह परमेश्वर की वाचा का एक मध्यस्थ है। यह निर्गमन 19 में वचन 8 के दूसरे भाग से आरम्भ होता है और 20:20 तक चलता चला जाता है। आपको स्मरण होगा कि निर्गमन 19:9 में, परमेश्वर ने मूसा के साथ यह प्रतिज्ञा की थी कि:

मैं बादल के अंधियारे में होकर तेरे पास आता हूँ, इसलिये कि जब मैं तुझ से बातें करूँ तब वे लोग सुनें, और सदा तुझ पर विश्वास करें।" (निर्गमन 19:9)।

यहाँ पर ध्यान दें कि परमेश्वर ने कहा कि वह सीनै पर्वत के ऊपर प्रगट होगा और मूसा से बातें करेगा ताकि "लोग *सदैव* अपने विश्वास को [मूसा] में [रखें] ।" तब जो दृश्य आता है वह यह व्याख्या करता है कि कैसे परमेश्वर ने इस प्रतिज्ञा को पूरा किया।

इस चरण का मुख्य हिस्सा परमेश्वर के निर्देशों की दो समान्तर श्रृंखलाओं, मूसा की आज्ञाकारिता और परमेश्वर का प्रगटीकरण या ईशदर्शन से मिलकर निर्मित हुआ है। पहली श्रृंखला 19:10-19 में पाई जाती है जहाँ पर परमेश्वर मूसा को निर्देश देता है कि वह इस्राएल को परमेश्वर के साथ मुलाकात करने के लिए तैयार करे। मूसा ने परमेश्वर के निर्देश का पालन किया, और इसका परिणाम नाटकीय रूप से सीनै पर्वत के ऊपर ईशदर्शन का होना था – अर्थात् परमेश्वर की उपस्थिति का महिमामयी, दृश्य और श्रव्य प्रगटीकरण का होना।

इसके पश्चात्, हम निर्गमन 19:20-25 में दूसरी श्रृंखला को पढ़ते हैं। परमेश्वर ने मूसा को एक बार फिर से लोगों को तैयार करने के लिए निर्देश दिया, और मूसा ने आज्ञापालन किया। परिणामस्वरूप 20:1-17 में, कथा सीनै पर्वत पर हुए ईशदर्शन की ओर मुड़ जाता है जहाँ पर परमेश्वर ने सभी इस्राएलियों के सुनते हुए दस आज्ञाओं को दिया।

इस भाग के आरम्भिक खण्ड में दी हुई परमेश्वर की प्रतिज्ञा के साथ सन्तुलित करते हुए, निर्गमन 20:18-20 यह व्याख्या करता है कि परमेश्वर का मूसा को दी हुई प्रतिज्ञा पूरी हो गई थी। ये वचन यह प्रदर्शित करते हैं कि कैसे, पहाड़ पर परमेश्वर की आवाज को सुनने के पश्चात्, इस्राएली इतना ज्यादा डर गए थे कि उन्होंने परमेश्वर से उनसे सीधे बातें करने के लिए मना कर दिया। उन्होंने मूसा से याचना की कि वह उनके बदले में परमेश्वर से बातें करे। इस विनती की उपयोग दूसरी-पीढ़ी के पाठकों के लिए बिल्कुल स्पष्ट था। उनके स्वयं के पूर्वज मूसा की ओर उसे परमेश्वर की वाचा की व्यवस्था का मध्यस्थ मानते हुए मुड़ें थे और इसलिए उन्हें भी मुड़ना चाहिए था।

मूसा की वाचा की व्यवस्था (20:21-23:33) - मूसा के अधिकार ओर इस्राएल की वाचा के ऊपर इस भाग का तीसरा चरण निर्गमन 20:21-23:33 में पाया जाता है। ये अध्याय मूसा की वाचा की व्यवस्था की विषय-वस्तु को प्रस्तुत करते हैं। यह सम्पूर्ण चरण मूसा के अधिकार को इस बात पर ध्यान देने के द्वारा सही ठहराता है कि स्वयं परमेश्वर ने मूसा को इस्राएल की व्यवस्था देने के लिए आदेश दिया था।

इस चरण का परिचय 20:21-26 में दिया हुआ है। यहाँ पर, परमेश्वर ने मूसा को निर्देश दिया कि वह इस्राएलियों को उसकी आराधना की व्यवस्थाओं – मूर्तिपूजा और वेदियों के ऊपर निर्देशों के बारे में बता दे। ये वचन विस्तृत रूप से दस आज्ञाओं की पहली दो के ऊपर व्याख्या करती हैं। इसके पश्चात्, परमेश्वर ने मूसा को निर्देश दिया कि वह 21:1-23:33 मे वाचा की पुस्तक की विषय-वस्तु को बता दे।

वाचा की पुस्तक को किस तरह से इस्राएल में कार्य करना था, को समझने के लिए, यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि निर्गमन 21:1 में, परमेश्वर ने वाचा की पुस्तक का इस तरीके के साथ विवरण दिया है:

फिर जो नियम तुझे उनको समझाने हैं वे ये हैं (निर्गमन 21:1)।

इब्रानी शब्द הַמִּשְׁפָּטִים *(हम्मिशपाटिम)* का अनुवाद व्यवस्था के लिए यहाँ पर किया गया है। इस शब्द में "वैधानिक न्याय" के भाव मिलते हैं, या जिसे "मुकद्दमे की व्यवस्था" कहा जा सकता है। वाचा की पुस्तक का यह पद हमें मूसा के द्वारा परमेश्वर की दोहरी वाचा की व्यवस्था की ओर स्पष्ट दिशा निर्देश देता है। मूलत: दस आज्ञाएँ

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

वैधानिक व्यवस्था, या इस्राएल में सामान्य कानून के सिद्धान्तों के रूप में कार्य करती हैं। और वाचा की पुस्तक विस्तृत विषयों के ऊपर वैधानिक उदाहरणों को प्रस्तुत करते हैं जिनका पालन इस्राएलियों के न्यायियों को करना था। इनमें से कई उदाहरण अन्य प्राचीन निकट पूर्वी कानून संहिताओं और *हम्मूराबी की कानून संहिता* में दी हुई व्यवस्था के जैसी ही हैं। ये संहिताएँ और वाचा की पुस्तक न्यायियों के लिए लिखी गई थी ताकि वे इनका उपयोग न्यायालयों में उनकी जाति के लिए करे।

ऐसा कहिए कि वाचा की पुस्तक अन्य वैधानिक संहिताओं के समान्तर है जो हमें प्राचीन निकट पूर्व उत्तरोत्तरकालीन तीसरी सदी से लेकर ईस्वी पूर्व दूसरी सदी में मिलती हैं। यह उस भाव में भिन्न है कि यह वाचा के संदर्भ में है। हम्मूराबी की कानून संहिता इन सबमें सबसे अधिक प्रसिद्ध है, यह सभी कानून संहिताओं में सबसे अधिक व्यापक है... जिस तरह से व्यवस्था इसमें सूत्रबद्ध की गई है वह "यदि-तब" की पद्धति – जिसमें "तब" सामान्य रूप से परिस्थितियों के लिए दिवानी कानूनों के भाग को देता है – जो कि इसके बहुत समान है कि कैसे निर्गमन 21:1 में व्यवस्था सूत्रबद्ध की हुई है, मै 22:16 के बारे में सोचता हूँ, मैं सोचता हूँ, कि यह एक तरह से "यदि-तब" की सरंचना है, जिसे धर्मविचारक आकार, मुकद्दमे की व्यवस्था का आकार कह कर पुकारा गया है। जह हम वास्तविक विवरणों में जाते हैं, तो इस्राएल के समाज और प्राचीन बाबुल के समाज के मध्य में पाई जाने वाली भिन्नता, ऐसा कहिए, कि मेसोपोटामिया की शहर-व्यवस्था, बहुत ही भिन्न है। बाबुल की शहर-व्यवस्था, बाबुल की तरह स्तरीकृत समाज था, जिसमें व्यक्ति स्वतंत्र, जन्म से स्वतंत्र और अन्य स्तर पर सामान्य थे, और इसके पश्चात् गुलाम थे। इसके साथ ही इसकी बहुत ही भिन्न अर्थव्यवस्था समाज में विभिन्न समाजिक भूमिकाओं के साथ थी। वहाँ पर सामर्थ्यशाली मन्दिर भवन था जो कि सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था में अपनी भूमिका निभाता था। महल, राजकीय महल समाज के ढांचे में एक मुख्य पहलू अदा करता था। और यह लगभग एक सामन्ती समाज के जैसा था, जैसा कि हम मध्यकालीन सामन्ती समाज के बारे में सोचते हैं। इस्राएल समाज, आधुनिक व्यक्तिपरक अर्थ में नहीं, अपितु बहुत ही ज्यादा समतावादी था, क्योंकि यह कृषि अर्थव्यवस्था के ऊपर आधारित था भूमि की बटाई के लिए एक आदिवासी संगठन था। इस कारण, वहाँ पर एक जैसी ही विशेषता नहीं थी, वहाँ पर एक जैसा ही समाज स्तरीकरण नहीं था जैसा कि आप हम्मूराबी की संहिता में पाते हैं। - डॉ. डगलस ग्रोप

वाचा का पुष्टिकरण (24:1-11) - मूसा के अधिकार और इस्राएल की वाचा का चौथा और अन्तिम चरण, निर्गमन 24:1-11 में वाचा के पुष्टिकरण का विवरण है। यह चौथा चरण जो कुछ निर्गमन 19:1 से लेकर वचन 8 के आरम्भ में वाचा के दीक्षाकरण के साथ आरम्भ हुआ का समापन है। अब विशेष रूप से निर्गमन 24:3 और 7 दोनों 19:8 के साथ गूँजते हैं जहाँ पर इस्राएल ने एक ही स्वर में जो कुछ परमेश्वर ने आदेश दिया उसके प्रति समर्पित होने के लिए अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया है।

इससे आगे, इस चरण का अन्तिम दृश्य यह विवरण देता है कि कैसे इस्राएल के अगुवे सीनै पहाड़ पर चढ़े, परमेश्वर को देखा और उसके साथ आश्चर्यजनक सद्भाव में खाया और पीया। परमेश्वर के साथ शान्ति और सद्भाव का यह दृश्य निर्गमन के मूल पाठकों को किसी भी तरह की हिचक यदि उनमें है तो उसे दूर करने के लिए निर्मित किया गया था। वह कैसे परमेश्वर के साथ शान्ति और सद्भाव का अनुभव कर सकते थे? अपने दिनों में केवल मूसा के द्वारा दी हुई परमेश्वर की वाचा की व्यवस्था के स्थाई अधिकार को स्वीकार करते हुए।

अब क्योंकि हमने सीनै पर्वत के ऊपर कनान के लिए मूसा और इस्राएल की तैयारी की खोज निर्गमन 19:1-24:11 में इस्राएल की वाचा के ऊपर देखते हए कर ली है, इसलिए हमें अब निर्गमन के हमारे अन्तिम मुख्य ध्यानाकर्षण की ओर मुड़ना चाहिए। मूसा के अधिकार और इस्राएल के मिलाप के तम्बू का महत्व निर्गमन 24:12-40:38 में प्रगट होता है। ये अध्याय मूसा के स्थाई अधिकार का समर्थन उस महत्वपूर्ण भूमिका के ऊपर ध्यान केन्द्रित करते हुए करते हैं जिसे उसने परमेश्वर के मिलाप के तम्बू की स्थापना में अदा की।

इस्राएल का मिलाप का तम्बू (24:12-40:38)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

बाइबल के अधिकांश विद्यार्थी इस्राएल के मिलाप वाले तम्बू या निवासस्थान के बारे में इसे एक आराधनालयघर से थोड़ा सा ज्यादा ही सोचते हैं, परन्तु समकालीन पुरातात्विक खोजों ने दृढ़ता के साथ यह सुझाव दिया है कि यह इससे बहुत अधिक है। यह प्राचीन मिस्र में फिरौन का रिवाज था कि वह अपनी सेना के साथ युद्ध पर जाया करता था। जब वह ऐसा करते थे, तो वह एक व्यापक तम्बू के ढांचों में, अर्थात् चलते फिरते महलों में रहा करता था। ये राजकीय युद्ध के तम्बू भीतरी और बाहरी कमरे चारों ओर के एक आंगन से ढके हुए होते हैं। इन तम्बूओं में, सेनाएँ अपने राजा को श्रद्धांजलि दिया करती थी और उससे निर्देशों को प्राप्त करती थी। इन्हीं विचारों के साथ, निर्गमन परमेश्वर के मिलाप के तम्बू को आराधना के लिए एक आराधनालय से ज्यादा प्रस्तुत करती है। यह युद्ध का उसका राजकीय तम्बू था। और ऐसा था, कि जहाँ पर इस्राएल की सेना ने उसके ईश्वरीय राजा को श्रद्धांजलि अर्पित की और जहाँ पर इस्राएल के ईश्वरीय राजा ने इस्राएल की सेना को अपने निर्देश देना प्रकाशित किया।

मिलाप के तम्बू के लिए निर्देश (24:12-31:18) – मूसा के अधिकार और इस्राएल के मिलाप के तम्बू का विवरण तीन मुख्य भागों में विभाजित है। प्रथम, निर्गमन 24:12-31:18 मिलाप के लिए मूसा को परमेश्वर को दिए हुए निर्देशों से मिल कर बना हुआ है। मिलाप के तम्बू के लिए परमेश्वर के निर्देश निर्गमन 24:12-18 में परमेश्वर की ओर से मूसा को पत्थर की पट्टियाओं पर दस आदेशों को प्राप्त करने की बुलाहट से आरम्भ होते हैं। इसके पश्चात् मिलाप के तम्बू के लिए परमेश्वर के विशेष निर्देश 25:1-31:17 में प्रगट होते हैं। ये निर्देश मिलाप के तम्बू की वास्तुकला और बनावट का विशेष विवरण देते हैं। परमेश्वर ने साथ ही मिलाप के तम्बू में व्यक्तिगत् के लिए और प्रथाओं के लिए दिशा निर्देशों को याजकों, कलाकारों, और कुशल कारीगरों के द्वारा दिए। और उसने साप्ताहिक सब्त के सम्बन्ध में प्रत्यक्ष निर्देशों को भी दिया। इन विवरणों की गिनती और लम्बाई युद्ध के लिए राजकीय तम्बू के प्रति निश्चित आचार व्यवहार के पालन करने की महत्वपूर्णता को प्रदर्शित करती है। निर्देशों के इन मुख्य हिस्सों के पश्चात्, हम मूसा के द्वारा सफलतापूर्वक निर्गमन 13:18 में पत्थर की पट्टियाओं के ऊपर लिखी हुई दस आज्ञाओं को प्राप्त करते हुए पाते हैं। यह मिलाप के तम्बू के लिए परमेश्वर के निर्देशों के समापन का चिन्ह है।

अब, इस भाग में कई अवसरों पर, परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से इस तथ्य की ओर संकेत किया है कि उसके दिशा निर्देश न केवल सीने पर्वत पर इस्राएलियों के लिए थे। परन्तु साथ ही यह निर्गमन की दूसरी-पीढ़ी के पाठकों के लिए भी थे। निर्गमन 27:21; 28:43; 29:9 और 42; 30:21; और 31:16 जैसे स्थानों में, परमेश्वर ने इस वाक्यांश, "यह विधि इस्राएल की पीढ़ियों के लिए सदैव बनी रहेगी" के लिए कई भिन्नताओं का उपयोग किया है। यह संकेत देता है कि कैसे मिलाप के तम्बू के लिए उसके निर्देशों के विभिन्न पहलू भविष्य की पीढ़ियों के द्वारा पालन किए जाने थे। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, मूल पाठकों के लिए इन संकेत की बातें बिल्कुल स्पष्ट थी। उन्हें उनके अपने दिनों में मिलाप के तम्बू के लिए परमेश्वर के दिए हुए निर्देशों को पालन करना था।

जिस तरह से मिलाप के तम्बू को निर्गमन की पुस्तक में विवरण देते हुए रखा गया है उसकी तकनीक के तरीके में विशेष रूप से कई समानताएँ हैं, कि कैसे इसके खम्भे और डंडों को इक्ट्ठे रखना है और ऐसी ही अन्य बातों के साथ था और इसके पश्चात् इसे खोल देना और इसे उठा कर लिए चलना है ताकि यह प्रभावशाली रूप से चलता हुआ बन जाए। इसकी मिस्र में कई विभिन्न अवधियों के साथ समानताएँ हैं, परन्तु सबसे विशिष्ठ समानता रामसेस II को अबू सिम्बल के मन्दिर में कादेश के युद्ध में मिली उभरी हुई नक्काशी से है, जो कादेश के युद्ध के स्मरणोत्सव को मनाता है, जिसमें वह दावा करता है कि उसने विजय को प्राप्त किया था परन्तु अधिकांश विद्वान यह सोचते हैं कि, एक तरह से, वह बच कर निकल जाने के कारण भाग्यशाली रहा था। परन्तु अबू सिम्बल के मन्दिर की दीवार पर उभरी हुई नक्काशी दिखाई देती है जो उसके तम्बू, युद्ध के उसके अपने तम्बू को दिखाती है, और इसकी सटीक वही माप हैं जो कि मिलाप के तम्बू के एक तरह के चौरस भीतरी कमरे के थे, जो कि अवश्य ही सिंहासन वाला कमरा होना चाहिए, तब एक लम्बा दालान होना चाहिए, जो कि भीतरी कमरे से दो गुणा लम्बा होना था, और इसके बाहर एक आयताकार आंगन था, जो मिलाप के तम्बू के चारों ओर आयाताकार आंगन के जैसे ही था। इसी के साथ, हम इस उभरी हुई नक्काशी में देखते हैं कि उसकी

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

सेना के चार प्रभागों को उसके तम्बू की चारों दिशाओं में रखा गया है, बहुत कुछ वैसी है जैसे गिनती की पुस्तक में विवरण दिया गया है। मिलाप का तम्बू सबसे पहले लेवियों के द्वारा घिरा हुआ है और इसके पश्चात् चारों दिशाओं में तीन गोत्रों के साथ चार भागों में बाँटते हुए घिरा हुआ है। - डॉ. डगलस ग्रोप

विफलता और नवीकरण (32:1-34:35) – मिलाप के तम्बू के लिए परमेश्वर के द्वारा निर्देश दिए जाने के पश्चात्, मूसा ने निर्गमन 32:1-34:35 में सीनै पर्वत की तराई में इस्राएल की विफलता और नवीकरण का वर्णन किया है। ये अध्याय तीन मुख्य भागों में विभाजित हैं। 32:1-35 में, हम पढ़ते हैं कि इस्राएली उनकी परमेश्वर के साथ बाँधी हुई वाचा को सीनै पर्वत के ऊपर सोने के बछड़े की पूजा कर के तोड़ रहे हैं। ये अध्याय मूसा के अधिकार को सही ठहराते हैं क्योंकि मूसा ने स्वयं की पहचान घनिष्ठता के साथ इस्राएलियों के साथ की और उनके लिए मध्यस्थता की थी। अपने स्वयं के जीवन को खतरे में डालते हुए, मूसा ने मध्यस्थता की और इस्राएल की ओर परमेश्वर की कृपा को प्राप्त कर लिया था। और परमेश्वर ने पूरी तरह से जाति को नाश नहीं किया था।

इसके पश्चात् इस भाग के दूसरे चरण, निर्गमन 33:1-23, परमेश्वर की अनुपस्थिति के खतरे की ओर मुड़ता है। इस बात पर सहमत होते हुए कि वह तुरन्त इस्राएल का नाश नहीं करेगा, परमेश्वर ने मूसा को आगे बढ़ने का आदेश दिया। परन्तु परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति को उनसे हटा लेने की धमकी दी क्योंकि हो सकता है कि वह उनकी यात्रा में इस्राएल को नाश कर देगा। परन्तु एक बार फिर से, मूसा ने स्वयं की पहचान इस जाति के साथ करते हुए, इस्राएल के बदले में मध्यस्थता की, और परमेश्वर की अनुपस्थिति के खतरे को दूर कर दिया।

इस भाग में तीसरा चरण, 34:1-35 में इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा के नवीकरण को सम्मिलित करता है। परमेश्वर ने यह पुष्टि कर दी थी कि वह इस्राएल के साथ कनान की ओर वाचा का नवीकरण करते हुए जाएगा। और यह अध्याय मूसा को वाचा का नवीकरण उसके द्वारा प्रभावशाली तरीके से मध्यस्थताएँ करने का उल्लेख करते हुए इस्राएल का अगुवा होने के रूप में प्रशंसा करता है।

मिलाप के तम्बू का निर्माणकार्य पूरा होना (35:1-40:38) – अन्त में, मूसा के अधिकार और इस्राएल के मिलाप के तम्बू के ऊपर यह भाग निर्गमन 35:1-40:38 में मिलाप के तम्बू के निर्माणकार्य के साथ समाप्त होता है। ये अध्याय 35:1-3 में साप्ताहिक सब्त के स्मरण के साथ आरम्भ होता है। इसके पश्चात् परमेश्वर मूसा को मिलाप के तम्बू को 35:4-9:43 में निर्माण करने के लिए और इसके संचालन के लिए नियुक्त करता है। निर्गमन 40:1-33 मिलाप के तम्बू के वास्तविक निर्माण को दर्शाता है। इन वचनों में दिए हुए विवरण यह प्रदर्शित करते हैं कि कैसे मिलाप के तम्बू, युद्ध के लिए परमेश्वर के राजकीय तम्बू का निर्माण, परमेश्वर के पहले दिए हुए निर्देशों को पूर्णता के साथ लागू किए जाने की पुष्टि करते हैं। और इस भाग का अन्त 40:34-38 में मिलाप के तम्बू के पूर्ण होने की प्रतिक्रिया स्वरूप इस्राएल के ऊपर परमेश्वर की दी हुई आशीष के साथ होता है।

इस्राएल के ऊपर परमेश्वर की आशीष का अन्तिम दृश्य एक बार फिर से मूसा के अधिकार के ऊपर केन्द्रित है। यह मूल पाठको को मूसा के अधिकार के प्रति परमेश्वर के मिलाप के तम्बू के लिए दिए हुए सभी आचार व्यवहारों को पालन करते हुए समर्पित करने के लिए उत्साहित करता है, ताकि वे परमेश्वर की आशीष को प्राप्त करें। सुनिए इस पुस्तक निर्गमन 40:36-38 के अन्तिम वचनों को:

इस्राएलियों की सारी यात्रा में ऐसा होता था, कि जब जब वह बादल निवास के ऊपर उठ जाता तब तब वे कूच करते थे। और यदि वह न उठता, तो जिस दिन तक वह न उठता था - उस दिन तक वे कूच नहीं करते थे। इस्राएल के घराने की सारी यात्रा में दिन को तो यहोवा का बादल निवास पर, और रात को उसी बादल में आग उन सभों को दिखाई दिया करती थी (निर्गमन 40:36-38)।

मूसा ने इस पुस्तक का अन्त कनान की ओर इस्राएल की यात्रा को इस महिमामयी सकंलन को जोड़ते हुए किया है। उसने परमेश्वर की उपस्थिति का स्मरण कराते हुए उन्हें संकेत दिया क्योंकि पहली पीढ़ी मिलाप के तम्बू के लिए मूसा के निर्देशों के प्रति अधीन हुए थे। दूसरी-पीढ़ी के पाठक अपनी आँखों से परमेश्वर की वैभवशाली उपस्थिति को देख सकते थे। और यदि वे परमेश्वर की उपस्थिति को अपने साथ रखने की अपेक्षा करते हैं तो जब वे

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

प्रतिज्ञात् भूमि की विजय की ओर बढ़ रहे थे, तो उन्हें मूसा के मिलाप वाले तम्बू के निर्देशों के प्रति समर्पित होना चाहिए था – उन निर्देशों के प्रति जो कि युद्ध के लिए उनके ईश्वरीय राजा के राजकीय तम्बू के लिए थे।

अब क्योंकि हमने निर्गमन की पुस्तक के कुछ आरम्भिक सोचविचारों अर्थात् सरोकारों और सरंचना और विषय वस्तु की खोज कर ली है, इसलिए हमें हमारे तीसरे मुख्य विषय: इस पुस्तक के मुख्य विषय की ओर मुड़ना चाहिए। निर्गमन में ऐसे कौन से कुछ महत्वपूर्ण विषय हैं जिन्होंने मूल पाठकों के जीवनों को प्रभावित किया है? और मसीह के अनुयायी होने के नाते इन मुख्य विषयों कैसे लागू किया जाना चाहिए?

मुख्य विषय

इस पूरे अध्याय में, हमने संकेत किया कि कैसे निर्गमन की पुस्तक इस्राएल के ऊपर मूसा के स्थाई अधिकार को प्रकाशित करने के लिए रूपरेखित की गई है। यह विषय जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही हमें सदैव इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि यही *केवल* एक इस पुस्तक का विषय नहीं है। जबकि पवित्रशास्त्र का यह हिस्सा मूसा के अधिकार के विषय को दृढ़ करता है, वह ऐसा अन्य विषयों की ओर ध्यानाकर्षित करते हुए करता है जो कि इस मुख्य, एकीकृत विषय के साथ सम्बन्धित है।

> **निर्गमन वास्तव में मूसा के अधिकार के साथ कई अन्य विषयों को प्रस्तुत करते हैं जिन्हें हम कई, कई विभिन्न तरीकों से सारांशित कर सकते हैं। परन्तु इस पुस्तक के मुख्य विषयों को सारांशित करने के लिए एक सबसे सहायतापूर्ण रणनीति इस बात की खोज करना है कि यह पुस्तक कैसे परमेश्वर के राज्य के ऊपर जोर देती है। अब, यह एक ऐस विषय है, जो कि पूरी बाइबल में चलता रहता है, और यह यहाँ तक कि नए नियम की पराकाष्ठा तक पहुँचता है, इस कारण हमारे देखने के लिए यह इस पुस्तक में एक महत्वपूर्ण विषय है। अब, कई बार आधुनिक मसीही विश्वासी निर्गमन के इस पहलू को देखने में रह जाते हैं, परन्तु हम सब जानते हैं कि निर्गमन उस समय का निपटारा करती है जब परमेश्वर ने सीनै पर्वत के ऊपर इस्राएल को एक *प्रामाणिक* जाति के रूप में गठित किया था, और जिस समय उसने उन्हें प्रतिज्ञात् भूमि में एक राज्य के रूप में और इसके पश्चात् तब पूरे संसार के लिए निर्मित होने के लिए तैयार किया था। और इस तरह से, हम इस पुस्तक में परमेश्वर के राज्य के इस महत्व को देख सकते हैं, परन्तु देखने के लिए सर्वोत्तम तरीकों में से एक यह देखना है कि कैसे निर्गमन परमेश्वर का चित्रण करती है। परमेश्वर निर्गमन की इस पुस्तक में एक मूल चरित्र है, और इस कारण इस के पास परमेश्वर के बारे में बोलने के लिए बहुत कुछ है, परन्तु यह प्राथमिक रूप से परमेश्वर को इस्राएल का राजा होने के ऊपर जोर देती है।**
> **- डॉ रिचर्ड एल. प्रॉट, जूनियर**

पवित्रशास्त्र में निर्गमन ऐसी पहली पुस्तक है जो कि *स्पष्टता* के साथ से परमेश्वर को राजा के रूप संदर्भित करती है। निर्गमन 15:1-18 में, इस्राएलियों के द्वारा लाल समुद्र को पार कर सूखी भूमि पर आने के पश्चात्, मूसा और इस्राएलियों ने यहोवा की प्रशंसा में गीत गाए। इस गीत का विषय-वस्तु निर्गमन के समय बाहर आई पहली और दूसरी पीढ़ी के अनुभवों की ओर इक्ट्ठा ध्यानाकर्षित करती है। यह मिस्र से इस्राएल के अतीत के छुटकारे के ऊपर, और साथ ही कनान में विजय और बसने की भविष्य की सफलता के ऊपर भी ध्यान केन्द्रित करती है। रूचिपूर्ण बात यह है, कि समुद्र के ऊपर मूसा के अन्तिम शब्द परमेश्वर के शासन के अधीन दोनों को इक्ट्ठे अर्थात् मिस्र के अतीत के छुटकारे और कनान की भावी विजय और इसमें बसने की ओर ध्यानाकर्षित करती है। सुनिए निर्गमन 15:18 को जहाँ पर मूसा परमेश्वर के लिए अपने पूरे स्तुतिगान को इन शब्दों के साथ आकर्षित करता है:

> **यहोवा सदा सर्वदा राज्य करता रहेगा (निर्गमन 15:18)।**

जैसा कि यह वचन संकेत देते हैं, परमेश्वर सामर्थ्य के साथ निर्गमन की दोनों पीढ़ीयों के साथ इस्राएल का ईश्वरीय राजा होने के साथ, "वह जो सदा सर्वदा राज्य करता रहेगा," अपनी महिमा को प्रदर्शित करते हुए कार्य करता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

इस आलोक में, निर्गमन के मुख्य विषयों को उन चार तरीकों पर ध्यान देते हुए जिनमें निर्गमन मूसा के दिनों में परमेश्वर के शासन के ऊपर जोर देती है, संगठित करना सहायतापूर्ण होगा। प्रथम, हम निर्गमन 1:1-4:32 में यह खोज करेंगे कि कैसे परमेश्वर इस्राएल की राजकीय वाचा को संभाले रखने वाला था। दूसरा, निर्गमन 5:1-18:27 में हम यह देखेंगे कि कैसे निर्गमन इस्राएल के विजयी राजकीय योद्धा के ऊपर विशेष ध्यान केन्द्रित करता है। इसके पश्चात्, हम परमेश्वर के उस विषय के ऊपर देखेंगे कि वह निर्गमन 19:1-24:11 में राजकीय व्यवस्था की वाचा देने वाला है। और अन्त में, हम परमेश्वर के उस विषय के ऊपर विचार करेंगे कि वह निर्गमन 24:12-40:38 में इस्राएल का वर्तमान का योद्धा है। आइए इन सब विषयों को, परमेश्वर को राजकीय वाचा को संभाले रखने वाला के साथ आरम्भ करते हुए देखें।

वाचा संभालने वाला (1:1-4:31)

यद्यपि परमेश्वर का विषय कि वह इस्राएल की राजकीय वाचा को संभाले रखने वाला है निर्गमन की पूरी पुस्तक में प्रगट होता है, यह मूल रूप से निर्गमन 1:1-4:31 के ऊपर जोर देता है। ये अध्याय मूसा के जन्म से पहले से लेकर इस्राएल के ऊपर उसके नेतृत्व के लिए उठने तक की घटनाओं की पुनरावृत्ति है। उदाहरण के लिए निर्गमन 2:24 को सुनिए जहाँ पर हम ऐसा पढ़ते हैं कि:

> **परमेश्वर ने उनका [इस्राएलियों का] कराहना सुनकर अपनी वाचा को, जो उस ने अब्राहम, और इसहाक, और याकूब के साथ बाँधी थी, स्मरण किया (निर्गमन 2:24)।**

यह वचन महत्वपूर्ण है क्योंकि, एक संक्षिप्त टिप्पणी को छोड़कर परमेश्वर ने धाइयों को आशीषित किया जो उसका भय मानती थी, यह पहली बार है जब निर्गमन परमेश्वर का उल्लेख करती है, आरम्भ से ही, निर्गमन परमेश्वर को राजकीय वाचा को संभाले रखने वाले के रूप में प्रगट करती है, वह जो "अपनी वाचा को स्मरण" रखता है।

जब कभी भी पवित्रशास्त्र परमेश्वर और उसकी वाचा का उल्लेख करता है, तो वह अस्पष्टता के साथ उसके ऊपर इस्राएल के ईश्वरीय राजा के रूप में ध्यान केन्द्रित करता है। बाइबल के इतिहास के समय, परमेश्वर ने उसके लोगों के साथ इस तरह से वाचा बाँधी जो कि उन सन्धियों के जैसे थी जिन्हें प्राचीन निकट पूर्व में अन्य जातियों के साथ बड़े राजा बाँधा करते थे। आज, हम इन अंतरराष्ट्रीय संधियों को "अधिपति-जागीरदार सन्धियों" के नाम से पुकारते हैं। इन सन्धियों में, बड़े राजा, या अधिपति, निम्न स्तर के राजाओं या जागीरदारों, और अन्य जातियों के साथ शान्तिमय प्रबन्धों को स्थापित करते थे। इस्राएली इसे समझ गए थे, इस्राएल के विश्वासयोग्य *वाचा को संभालने वाले* के रूप में, परमेश्वर उनका ईश्वरीय राजा भी था। और उसने इस्राएल के कुलपतियों के साथ बाँधी हुई अपनी वाचा को मूसा के दिनों में कार्य करते हुए पूरा किया। इस तरह से, परमेश्वर की मूसा के साथ बाँधी हुई वाचा इस्राएल के कुलपतियों के साथ बाँधी हुई पूर्वोत्तर की वाचाओं से भिन्न नहीं थी। इसकी अपेक्षा, यह उनकी पूर्णता थी। निर्गमन 3:14-15 पर दिए हुए महत्व को सुनिए, जहाँ पर परमेश्वर अपने नाम को मूसा को प्रकाशित करता है।

> **मैं जो हूँ सो हूँ। फिर उस ने कहा, तू इस्राएलियों से यह कहना: "कि जिसका नाम मैं हूँ है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है... तुम्हारे पितरों का परमेश्वर - अर्थात् अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर - यहोवा उसी ने मुझ को तुम्हारे पास भेजा है (निर्गमन 3:14-15)।**

यहाँ पर ध्यान दें कि परमेश्वर ने मूसा से उसकी पहचान इस्रालियों को तीन भिन्न नामों: "मैं जो हूँ सो हूँ," "मैं हूँ," और "यहोवा" से कराने के लिए के लिए कहा।

इसे समझना कि यह नाम कैसे परमेश्वर के साथ उसके द्वारा राजकीय वाचा को संभाले रखने में सम्बन्धित होते हैं, हमें यह समझने की आवश्यकता है यह सभी तीन नाम इब्रानी भाषा की एक ही क्रिया הָיָה (*हायाह*) के भिन्न रूप हैं। यह शब्द अकसर "कुछ होने" की क्रिया के रूप में अनुवाद किया गया है। "मैं जो हूँ सो हूँ"

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

या "मैं जो हूँ सो वह होऊँगा" को देखना आसान है जैसा कि इब्रानी शब्द को अनुवाद किया जा सकता है – और इसका संक्षिप्त रूप "मैं हूँ," या "मैं होऊँगा," इस क्रिया के प्रथम-व्यक्ति रूप को सम्मिलित करता है। परन्तु शब्द "यहोवा" का अनुवाद अधिक स्पष्टीकरण की मांग करता है।

शब्द "यहोवा" का तथाकथित ईश्वरीय चुर्तवर्णीय के नाम से जाना जाता है, अर्थात् परमेश्वर के इब्रानी नाम के चार-शब्द जिन्हें अकसर *"यहवह"* में लिखा जाता है। समकालीन पुरातात्विक खोजों ने यह संकेत दिया है कि इस शब्द को "यहोवा" के नाम से पुकारा जाना चाहिए। यहोवा को अकसर सबसे अधिक "प्रभु" के नाम से अनुवाद किया जाता है। परन्तु यह *"हायाह"* क्रिया के तीसरे व्यक्ति का रूप है, और इसे "वह है," या "वह होगा" के रूप में अनुवादित किया जा सकता है। सच्चाई तो यह है, कि इब्रानी भाषा की कुछ निश्चित परम्पराओं का अनुसरण करने के द्वारा, इसके अर्थ की यह संभावना होगी कि "वह किसी कार्य को करने का कारण है," या "वह किसी कार्य का कारण होगा।" इन्ही विचारों के साथ "मैं जो हूँ सो हूँ," का अनुवाद, *"मैं जिस कार्य को करता हूँ उसका कारण होऊँगा।"* और "मैं हूँ" का अनुवाद "मैं *कारण* होऊँगा" में किया जा सकता है।

ऐसा मानते हुए यह समझ सही है, इन वचनों में यहोवा नाम, और इससे सम्बद्ध नाम, सीधे ही इस सच्चाई की ओर संकेत करते हैं कि परमेश्वर उसकी वाचा को प्रतिज्ञाओं के होने का *कारण* बना रहा था। दूसरे शब्दों में, वह इस्राएल के कुलपतियों के साथ अपनी वाचा की प्रतिज्ञा को उन्हें पूरा करने के द्वारा संभाले हुए था।

यह देखना कठिन नहीं है कि क्यों मूसा ने यह जोर दिया है कि परमेश्वर उसकी वाचा की प्रतिज्ञाओं को पूर्ण करने में विश्वासयोग्य था। उत्पत्ति 15:14 में, परमेश्वर ने इस्राएल को एक विदेशी भूमि की कठिनाईयों से छुटकारा देने की प्रतिज्ञा दी थी। मूसा के मूल पाठकों को यह जानने की आवश्यकता थी कि परमेश्वर उनके दिनों में प्रतिज्ञा को पूरी कर रहा था। उन्हें यह देखने की आवश्यकता थी कि अतीत, वर्तमान और भविष्य की प्रत्येक आशीष उनके ईश्वरीय राजा के द्वारा उनके कुलपतियों के साथ वाचा को बनाए रखने के परिणामस्वरूप थी।

कई तरह से, यही कुछ मसीह के अनुयायियों के लिए सत्य था। परमेश्वर इस्राएलियों के कुलपतियों के साथ बाँधी हुई उसकी वाचा को *हमारे* अतीत, वर्तमान, और भविष्य में भी संभाले रखता है। लूका 1:68-73 जैसे संदर्भ हमें शिक्षा देते हैं कि अब्राहम के साथ बाँधी गई परमेश्वर की वाचा की अन्तिम पूर्णता मसीह के राज्य के उदघाटन, उसके पहले आगमन के समय से आरम्भ हुई। इसके अतिरिक्त, गलातियों 3:15-18 जैसे प्रसंग हमें बताते हैं कि मसीह के राज्य की निरन्तरता के समय हमें अब्राहम को दी हुई उसकी प्रतिज्ञाओं और परमेश्वर में निरन्तर विश्वास करना चाहिए। इसी के साथ, रोमियों 4:13 जैसे वचन यह शिक्षा देते हैं, कि मसीह के राज्य की पराकाष्ठा के समय, हम मसीह में जिस महिमामयी शाश्वत् पुरस्कार को प्राप्त करेंगे वह इस्राएल के कुलपतियों की परमेश्वर की दी हुई प्रतिज्ञाओं की पूर्णता में होगा।

हम मसीह में हैं। मसीह अब्राहम की वाचा का उत्तराधिकारी है। और परमेश्वर अब्राहम के साथ बाँधी हुई वाचा को संभाले रखने में असफल नहीं होगा। हमारे संसार के लिए यह और कई ऐसे ही अन्य उपयोग निर्गमन के प्रत्येक संदर्भ से निकल कर आते हैं जिन्हें निर्गमन प्रगट करता है कि परमेश्वर इस्राएल की वाचा को संभाले रखने वाला राजा है।

निर्गमन की पुस्तक प्रगट करती है कि परमेश्वर सदैव उसकी वाचा के प्रति विश्वासयोग्य है, क्योंकि यहाँ तक कि जब इस्राएल की सन्तान ने मूसा के विरूद्ध विद्रोह किया और उन्होंने जो कुछ परमेश्वर ने अतीत में उनके साथ किया था उसे सम्मान नहीं दिया, परमेश्वर उन्हें छुटकारा देने के लिए अपनी प्रतिज्ञाओं पर बना रहा। परमेश्वर ने उनके विद्रोह के कारण उनके ऊपर से आशा को नहीं छोड़ी होता, परन्तु उसे उस लक्ष्य को प्राप्त करना था जो उसने उनके छुटकारे के लिए रखा था। और यह लक्ष्य जिसे परमेश्वर ने हम सबके लिए रखा है कि हम उसकी निकटता में आ जाएँ। यह बात कोई अर्थ नहीं रखती है कि चाहे हम परमेश्वर से कितनी भी दूर क्यों न चले जाएँ, परमेश्वर हमें अपने निकट ले आने के लिए प्रयास करता और बनाए रखता है। यह बात कोई अर्थ नहीं रखती है कि हम चाहे कितने भी टूटे हुए क्यों न हो, वह हमारी निकटता में चला आता है ताकि वह हमें ठीक कर दे और इसलिए कि वह हमें वापस घर ले आए।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

इस तरह से, निर्गमन की पुस्तक में, यह जीवन का प्रतिबिम्ब है कि परमेश्वर ने हमें बुलाया है। और वह वहाँ पर हमें छुटकारा देने वाला है। सच्चाई तो यह है, कि निर्गमन की पुस्तक एक छुटकारे की पुस्तक है। लोग पाप में गिर गए हैं और उन्हें छुटकारे की आवश्यकता है, और हम इसे प्रतिदिन करते हैं। और परमेश्वर इसे प्रतिदिन करता है। वह हमें अपनी निकटता में ले आने के लिए प्रवीण है तब भी जब हम उससे उसके अनुग्रह से दूर भाग रहे होते हैं। - रेव्ह डॉ. साईप्रियन के. गुच्चीन्डा

परमेश्वर के मुख्य विषय की वह इस्राएल की राजकीय वाचा को संभाले रखने वाला है के अतिरिक्त, हमें परमेश्वर के उस उस महत्व के ऊपर ध्यान देना चाहिए कि निर्गमन 5:1-18:27 में इस्राएल का विजयी राजकीय योद्धा है।

विजयी योद्धा (5:1-18:27)

मूसा के दिनों के प्रत्येक मुख्य साम्राज्य की पुरातत्विक खोजें यह दिखाती हैं कि ईश्वरीय और मानवीय शासकों को युद्ध की विजय के साथ सम्बन्धित होना कितना सामान्य था। इसलिए, यहाँ तक कि इस्राएल के लिए विजयी योद्धा होने के रूप में परमेश्वर के लिए थोड़े से संकेत का यह संकेत था कि वह इस्राएल के ऊपर विजयी राजा भी था।

हम परमेश्वर के ऊपर इस्राएल के विजयी राजकीय योद्धा के रूप में, प्रथम, मूसा के मिस्र में रहने के समय को देखेंगे। इसके पश्चात् हम इस विषय की जाँच करेंगे जब मूसा और इस्राएली मिस्र से सीनै की ओर पलायन कर रहे थे। आइए मिस्र में मूसा से आरम्भ करें।

मिस्र में

यह विषय पूरे निर्गमन में प्रकट होता है, परन्तु हम इसे विशेष रूप से 5:1-13:16 में इस्राएल के छुटकारे के समय देखते हैं। परमेश्वर का मिस्र के विरूद्ध आश्चर्यजनक न्याय न केवल मूसा के अधिकार को सही ठहराता है; साथ ही यह इस्राएल के राजकीय योद्धा के रूप में परमेश्वर की विजय को प्रदर्शित करता है।

निर्गमन 12:12 में, परमेश्वर उसके बड़े न्याय, फसह के न्याय की विशेषता की बात, इस तरह से करता है:

मैं मिस्र देश के बीच में से होकर जाऊंगा - मिस्र देश के क्या मनुष्य क्या पशु, सब के पहिलौठों को मारूँगा - और मिस्र के सारे देवताओं को भी मैं दण्ड दूंगा; मैं तो यहोवा हूं (निर्गमन 12:12)।

इस वचन में परमेश्वर ऐसे घोषणा करता है कि "मैं प्रभु हूँ," या "मैं [यहोवा] हूँ।" यहाँ एक बार फिर से, परमेश्वर स्वयं की पहचान ऐसा कराता है जैसे कि वह ऐसा है जो अपने वाचा को पूरा करने के द्वारा स्मरण रखता है। इस्राएल के विजयी राजकीय योद्धा के रूप में वह "क्या मनुष्य क्या पशु, सब के पहिलौठों [को]" मारने वाला था। दूसरे शब्दों में, वह मिस्रियों और उनके समाज को नाश करने वाला था क्योंकि उन्होंने स्वयं को उसका शत्रु बना लिया था। और इस मानवीय महत्व के साथ, परमेश्वर "मिस्र के *देवताओं* के ऊपर भी न्याय" को लाने वाला था। वह झूठे देवताओं, दुष्ट आत्माओं को जिनकी आराधना मिस्री करते थे, को हरा देगा।

हम इस द्वंद्व को फिरौन और मिस्रियों के विरुद्ध यहोवा के आश्चर्यजनक न्याय में देख सकते हैं। इन न्यायों में से अधिकांश, यदि सभी नहीं मिस्र के झूठे देवताओं के ऊपर एक या उससे अधिक विजय को ले आए। उदाहरण के लिए, जब हारून की लाठी एक साँप बन गई और उसने फिरौन के जादूगरों के सांपों को निगल लिया, तो यह केवल फिरौन के ऊपर विजय ही नहीं थी। यह उस ईश्वरीय सामर्थ्य के ऊपर विजय थी जिसका संकेत कोबरा करता था जो कि फिरौन के मुकुट के ऊपर प्रतीक स्वरूप सजा हुआ था। जब परमेश्वर ने नील को लहू में परवर्तित कर दिया, तो उसने उसकी सामर्थ्य को उन मिस्री देवताओं और देवियों के ऊपर प्रगट किया जो नील के साथ सम्बद्ध थे, जैसे हापी, स्पेक देवता जो कि मगरमच्छ, खनूम और हटम्हयट जिनका चिन्ह मछली है का आकार ले लेते थे। मेढ़कों की विपत्ति ने परमेश्वर की सामर्थ्य को हेक्हट, मिस्री देवी के ऊपर प्रगट किया जो कि एक मनुष्य के सिर पर मेढ़क के सिर के रूप में चित्रित की हुई है। कोई भी मिस्री देवता निर्णायक रूप से कुटकियों की विपत्ति के साथ सम्बन्धित नहीं है। परन्तु विद्वानों ने पृथ्वी के देवता, जैसे गेब के होने के लिए कई सुझाव दिए हैं। इस विपत्ति ने मिस्री याजकों

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

और जादूगरों को अपमानित करने का कार्य किया होगा। डांसों की विपत्ति देवता खेपरे के विरुद्ध निर्देशित है, जिसे अक्सर उड़ती हुई मक्खी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। पशुओं की मौत बैल को प्रदर्शित करने वाले देवताओं के वर्गों को प्रकट करने के लिए थी जैसे कि ऐपिस, बुचीस, मेन्विस, प्टेह और रे, साथ देवताओं की रानी आईसिस और प्रेम और सुन्दरता की देवी हाथोर आदि। यह दोनों देवियाँ गाय के चिन्ह से चित्रित की गई हैं। फफोलों की विपत्ती के प्रगटीकरण की संभावना परमेश्वर की शेकमेट और इम्होटेप के ऊपर सामर्थ्य प्रगट करने की है, जो कि बीमारी और चंगाई से सम्बन्धित देवता हैं। ओलावृष्टि का न्याय परमेश्वर की सामर्थ्य को आकाश के देवता नट और शू जो कि आकाश की सहायता करता है के ऊपर प्रदर्शित करने के लिए थी। टिड्डियों सेनहेम के विरोध में थी जो कि कीटों से सुरक्षा प्रदान करता था। अन्धकार के न्याय ने यह दिखाया कि यहोवा महान् सूर्य देवता रे, या अमोन-रे के ऊपर सामर्थ्यशाली है। तब पहिलौठों की मृत्यु की अन्तिम विपत्ति का न्याय मीन और आईसिस का अपमान था जो कि सुरक्षा से सम्बन्धित देवतागण थे। जैसा कि यह सम्बन्धीकरण संकेत देते हैं, कि मिस्र में परमेश्वर के आश्चर्यजनक न्यायों ने न केवल उसके भौतिक शत्रुओं के विरुद्ध न्याय को प्रगट किया, अपितु साथ ही उसके आत्मिक शत्रुओं, शैतान की शक्तियों के विरूद्ध भी।

हमने परमेश्वर के विषय को देखा कि वह इस्राएल का विजयी राजकीय योद्धा है जब मूसा मिस्र में था। परन्तु परमेश्वर की मनुष्यों और आत्मिक सेनाओं के ऊपर विजय तब भी प्रगट होती है जब मूसा और इस्राएली निर्गमन 13:17-18:27 में सीनै पर्वत की ओर पलायन कर रहे थे।

पलायन के मध्य में (13:17-18:27)

इसमें कोई सन्देह नहीं है, कि सच्चाई यह है कि परमेश्वर ने इस्राएल की सेना को सीनै पर्वत की ओर ले चलते समय कठिनाइयों में से होकर जाने के द्वारा स्वयं को इस्राएल के राजकीय योद्धा के रूप में प्रकट किया। परन्तु इस पहलू को प्रदर्शित करने के लिए कदाचित् निर्गमन में मूसा के द्वारा लाल समुद्र पर गाए गए गीत की ओर मुड़ना चाहिए। सुनिए निर्गमन 15:3-4 को जहाँ मूसा ने ऐसे गाया है कि:

> **यहोवा योद्धा है; उसका नाम यहोवा है। फिरौन के रथों और सेना को उस ने समुद्र में फेंक दिया; और उसके उत्तम से उत्तम रथी लाल समुद्र में डूब गए (निर्गमन 15:3-4)।**

यहाँ पर मूसा स्पष्ट रूप से यहोवा को "एक योद्धा" के रूप में पहचान कराता है और इसके पश्चात् यह दुहराता है कि "उसका नाम [यहोवा] है।" परमेश्वर के नाम और परमेश्वर एक योद्धा के मध्य घनिष्ठता का सम्बन्ध पुराने नियम की जानी पहचानी अभिव्यक्तियाँ "सेनाओं का प्रभु" या "सेनाओं का यहोवा" की पृष्ठभूमि को निर्मित करती हैं। जैसा कि उसका नाम संकेत देता है, परमेश्वर, राजकीय योद्धा, सेनाओं के होने का कारण है, और वह उनकी सेनाओं को हरा देता है। इस घटना में, वह "फिरौन के रथों और उसकी सेना के ऊपर" उन्हें "समुद्र में फेंकने" के द्वारा विजय होता है। इसके पश्चात्, निर्गमन 15:11 में, मूसा स्वयं को परमेश्वर की विजय के आत्मिक पक्ष की ओर पहचान कराता है जब वह ऐसे कहता है कि:

> **हे यहोवा, देवताओं में तेरे तुल्य कौन है? तू तो पवित्रता के कारण महाप्रतापी - और अपनी स्तुति करने वालों के भय के योग्य, और आश्चर्य कर्म का कर्त्ता है (निर्गमन 15:11)।**

परमेश्वर की विजय ने न केवल उसकी सामर्थ्य को मिस्र की मानवीय सेना के ऊपर प्रगट किया, अपितु साथ ही उसने मिस्र के झूठे देवताओं के ऊपर पर अपनी विजय को प्रदर्शित किया।

> **इसका क्या अर्थ है कि परमेश्वर एक विजयी योद्धा है? ठीक है, प्राचीन संसार में इसका मूलभूत अर्थ यह था कि परमेश्वर सृष्टि का प्रभु और सच्चा राजा था, और ठीक यही हम निर्गमन 15 में देखते हैं। 15:11 में यह इस स्तुति में एक बड़े प्रश्न को पूछता है: "तेरे तुल्य कौन है?" और इसका उत्तर नहीं, कोई नहीं में है। कोई भी तेरे जैसा नहीं है, और विशेषकर, कोई भी देवता या देवी परमेश्वर के जैसा नहीं है। इस तरह से, जब हम परमेश्वर के बारे में एक विजयी योद्धा के रूप में बात करते हैं, तो यह एक ऐसे संदर्भ में शक्तिशाली कथन है जहाँ पर हजारों की सँख्या में अन्य देवतागण अस्तित्व में है जो परमेश्वर के नाम के**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

शीर्षक को पाना चाहते थे। और मूल रूप से, जो कुछ बाइबल करती है वह ही निपुणता भरा है। यह एक प्रश्न को पूछती है, "तेरे तुल्य कौन है?" और उत्तर कोई नहीं में है, इस बात के साथ कि: हो सकता है कि आप सोचते होंगे कि अन्य देवतागण यहाँ पर, परन्तु अन्त में, केवल वही है जो परमेश्वर के शीर्षक को लेने के योग्य है, और यह यहोवा है। और इसके पश्चात् निर्गमन 15 "यहोवा सदा सर्वदा राज्य करता रहेगा" के साथ समाप्त हो जाता है। और यह ऐसा योद्धा है जिसे हम चाहते हैं कि यह हमारे लिए युद्ध करे। - डॉ ब्रायन डी. रस्सेल

निर्गमन की पुस्तक फिरौन और उसके झूठे देवतागणों के ऊपर यहोवा की विजय के महत्व को दिखाती हुई दूसरी पीढी के मूल पाठकों को आश्वासन देती है। परमेश्वर *उनके* भौतिक और आत्मिक शत्रुओं को हराने के लिए सक्षम था। उन्होंने सीखा कि कैसे परमेश्वर ने उनके पितरों के साथ अतीत में युद्ध लड़ा था। इसी तरह से, उन्होंने यह भी सीखा कि कैसे वह उन्हें भविष्य में विजय देगा जब वे कनान की विजय में प्रवेश करेंगे।

बहुत कुछ इसी तरह से, जब मसीही विश्वासी निर्गमन में परमेश्वर की महान् विजय की शिक्षा को पाते हैं, हम इस बात पर चिन्तन कर सकते हैं कि नया नियम मसीह की विजय के बारे में क्या शिक्षा देता है। मत्ती 12:28 और 29 और यूहन्ना 12:31 और कुलुस्सियों 2:15 जैसे संदर्भों में, नया नियम यह शिक्षा देता है कि मसीह ने हमारे लिए दिव्य राजकीय योद्धा के रूप में कार्य किया जब उसने अपने राज्य का उदघाटन किया। परन्तु जबकि यीशु ने शैतान और संसार के झूठे देवतागणों को हरा दिया, उसने साथ ही दयालुता से भरते हुए परमेश्वर के साथ क्षमा और मेल मिलाप का प्रस्ताव उनको दिया है जो उसके अधीन होने के लिए स्वयं को दे देते हैं।

और 1 कुरिन्थियों 15:25, इब्रानियों 1:3 और 1 पतरस 3:22 जैसे संदर्भों से, हम शिक्षा पाते हैं कि यीशु हमारा राजकीय विजयी योद्धा उसके राज्य की निरन्तरता के समय में है। कलीसिया के अभी तक के पूरे इतिहास में हमें मसीह के द्वारा शैतान और संसार में अन्य बुरी आत्माओं को हराने की उसकी रणनीति का अनुकरण करना है। और हमें निरन्तर मसीह में विश्वास के द्वारा परमेश्वर के साथ क्षमा और मेलमिलाप का प्रस्ताव देते रहना है।

अन्त में, 2 थिस्सलुनीकियाँ 1:6 और 7, इब्रानियों 10:27 और 2 पतरस 3:7 जैसे संदर्भों में हम पाते हैं, कि उसके राज्य की पराकाष्ठा के समय, मसीह एक बार फिर से दिव्य राजकीय योद्धा के रूप में पुन: वापस आ जाएगा। परन्तु उसके पुनरागमन के समय, मसीह के मेलमिलाप का दयालुता भरा हुआ प्रस्ताव समाप्त हो जाएगा। वे जिन्होंने मसीह के पास आने से इन्कार कर दिया है उसी गतंव्य को पाएँगे जो शैतान और उसके दूत पाएँगे – अर्थात् परमेश्वर का शाश्वतकालीन न्याय।

परमेश्वर के मुख्य विषयों को जिसमें इस्राएल की राजकीय वाचा को संभालने वाला और विजयी राजकीय योद्धा के रूप में परमेश्वर को देख लेने के पश्चात्, हमें अब निर्गमन के तीसरे मुख्य विषय: परमेश्वर निर्गमन 19:1-24:11 में इस्राएल का राजकीय व्यवस्था की वाचा को देने वाले की ओर मुड़ना चाहिए।

व्यवस्था की वाचा देने वाला (19:1-24:11)

जैसा कि हमने पहले देखा था, ये वचन हमारे ध्यान को मूसा के अधिकार और इस्राएल की वाचा की व्यवस्था की ओर आकर्षित करते हैं। प्राचीन निकट पूर्व में, लोगों ने दोनों अर्थात् मानवीय और ईश्वरीय राजाओं में विश्वास किया कि यह दोनों के द्वारा दी हुई व्यवस्था में उन्होंने अपने ज्ञान को दिया है। इस कारण, यह निर्गमन के मूल पाठकों के लिए आश्चर्य का विषय नहीं था कि परमेश्वर उनकी राजकीय वाचा की व्यवस्था को देने वाला था। परन्तु, हमें यह जानने के लिए कि कैसे मूसा ने इस विषय के ऊपर जोर दिया, यह देखना सहायतापूर्ण होगा कि *क्यों* परमेश्वर ने निर्गमन की पुस्तक में उसकी व्यवस्था को दिया।

प्रत्येक मुख्य प्रोटेस्टैंट परम्परा ने व्यवस्था के तीन मुख्य उपयोगों के बारे में बोला है। सबसे पहले को अकसर "*यूज़स पीडागोगिक्स*" अर्थात् व्यवस्था का शैक्षणिक उपयोग। नए नियम के गलातियों 3:23-26, रोमियों 3:20 और रोमियों 5:20 और 21 जैसे संदर्भ हमें शिक्षा देते हैं कि परमेश्वर ने व्यवस्था को पाप को दिखाने और इसका भाण्डा फोड़ने के लिए किया। इस तरह से, मानवीय प्राणी उद्धार के लिए मसीह के पास आ गए। दूसरा प्रोटेस्टैंटवादियों ने जिसे अकसर "*यूज़स सिविलूस*" अर्थात् व्यवस्था के नागरिक और राजनैतिक उपयोग के लिए

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

उल्लेख किया। इस उपयोग में, व्यवस्था ने समाज में परमेश्वर की सजा के खतरे के माध्यम से पाप के ऊपर रोक लगाई। परन्तु यह दृष्टिकोण सामान्य रूप में पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं के साथ चाहे कितने भी सच्चे रहे हों, निर्गमन की पुस्तक उस बात पर जोर देती है जिसे "व्यवस्था का तीसरा उपयोग" कह कर पुकारा जाता है। इसे कई बार निर्देशात्मक उपयोग या *"यूज़स डिडाक्टीक्स,"* आदेशात्मक उपयोग कह कर पुकारा जाता है। इस घटना में, परमेश्वर की व्यवस्था उनके लिए नियम, या निर्देश है जो पहले से ही अनुग्रह के अधीन है। इस तरह से, निर्गमन की इस पुस्तक में, परमेश्वर ने मूल रूप से उसके लोगों, इस्राएल को उसकी आशीषों की ओर जाने के लिए मार्गदर्शन के लिए व्यवस्था को दिया।

यह विषय निर्गमन में कई स्थानों पर प्रगट होता है। परन्तु यह विशेष रूप से 19:1-24:11 में, परमेश्वर की इस्राएल के साथ बाँधी जाने वाली वाचा के आरम्भ होने और वाचा के निरन्तर पुष्टिकरण में स्पष्ट दिखाई देता है। निर्गमन 19:4 को सुनिए जहाँ पर परमेश्वर इस्राएलियों से ऐसे कहता है कि:

> **तुमने देखा कि मैंने मिस्रियों से क्या-क्या किया; तुम को मानो उकाब पक्षी के पंखों पर चढ़ाकर अपने पास ले आया हूँ (निर्गमन 19:4)।**

हम यहाँ पर देखते हैं कि इससे पहले कि इस्राएलियों ने व्यवस्था को प्राप्त किया होता, उन्होंने पहले से ही परमेश्वर के अनुग्रह का अनुभव कर लिया था। वचन 5 और 6 में, परमेश्वर तब व्यवस्था के प्रति इस्राएल की आज्ञाकारिता और निष्ठा के लाभों की शर्त की ओर मुड़ गया। उसने कहा कि:

> **इसलिये अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे; समस्त पृथ्वी तो मेरी है। और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे। (निर्गमन 19:5-6)।**

पहले से ही परमेश्वर के अनुग्रह को प्राप्त कर लेने के पश्चात्, इस्राएल उस की बहुमूल्य "निजी सम्पत्ति" होगा, यदि वह उसकी व्यवस्था को पालन करते हैं तो "याजकों का राज्य और पवित्र जाति" होगा। स्पष्ट है कि, परमेश्वर की व्यवस्था इसलिए नहीं दी गई थी कि इस्राएल उद्धार को *कमा* सके। व्यवस्था उसके लोगों के लिए उसका वरदान थी जिन पर उसने पहले से ही दया को दिखा दिया था।

इसी तरह का नमूना निर्गमन 20:1-17 में प्रगट होता है। 20:2 में, परमेश्वर ने इस्राएल की ओर अपनी दयालुता की घोषणा को यह कहते हुए दस आज्ञाओं के साथ आरम्भ की:

> **मै तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है (निर्गमन 20:2)।**

एक बार फिर से, हम देखते हैं कि परमेश्वर की दया इस्राएल को दी उसकी व्यवस्था से आनी आरम्भ हुई। यह इस घोषणा को दिए जाने के समय तक नहीं हुआ था जब परमेश्वर ने इस्राएल को दस आज्ञाएँ दी। और, दस आज्ञाओं में से कुछ जैसा कि स्पष्ट कहती हैं, इस्राएल व्यवस्था की आज्ञाकारिता के लिए आशीषों को प्राप्त करेगा।

> **हो सकता है कुछ लोग परमेश्वर की व्यवस्था को अनुग्रह के प्रति निर्माणात्मक और विपरीत समझते हैं, परन्तु जब हम उस तरीके के ऊपर देखते हैं जिसमें परमेश्वर ने पुराने नियम की व्यवस्था को दिया है, हम देख सकते हैं कि यह परमेश्वर के लिए दया से भरी हुई बात थी कि उसने व्यवस्था को इस तरीके से दिया। जो हम देखते हैं वह यह है कि परमेश्वर ने उसके लोगों मिस्र की गुलामी के बन्धन से उन्हें छुटकारा देने के पश्चात् व्यवस्था को दिया। जब उसने उनके बदले में हस्तक्षेप किया और उन्हें सामर्थ्यशाली तरीके से मार्गदर्शन दिया, वह तब उन्हें जंगल में ले आया और उन पर अपनी कृपा और उन पर अपनी योजना को प्रकट किया कि कैसे उन्हें उनके प्रभुत्व और राजकीय शासन में अपने महान् राजा के अधीन रहना था। और इस तरह से, व्यवस्था कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसे परमेश्वर ने चाहा कि उसके लोग पालन करें जिसके *पश्चात्* वह उन्हें उनसे छुटकारा देगा। इसकी अपेक्षा, व्यवस्था को मिस्र में से छुटकारा दिए जाने के *पश्चात्* में दिया गया था और यह उसके लोगों को मार्ग दिखाती है कि उन्हें परमेश्वर उनके महान् राजा के प्रभुत्व के अधीन, और यह कि उन्हें कैसे छुटकारा पाए हुए लोगों के रूप में एक दूसरे के साथ जीवन**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

यापन करना है। और इस तरह से, जब कभी भी आप पुराने नियम में व्यवस्था को पढ़ते हैं, तो यह पहले से ही उसके लोगों को परमेश्वर की दयालुता भरी हुई कृपा के संदर्भ में दी हुई है। - डॉ. ब्रान्डोन डी. क्रोवी

परमेश्वर ने साथ ही इस नमूने को वाचा के पुष्टिकरण के मध्य में किया। निर्गमन 24:1 और 2 में, उसने दयालुता के साथ इस्राएल के लोगों को सीनै पर्वत के ऊपर आने के लिए निमंत्रण दिया। वचन 3-8 में, लोगों ने व्यवस्था की आज्ञा पालन करने के लिए प्रतिज्ञा की। और वचन 9-11 में, इस्राएल के अगुवों ने परमेश्वर के साथ शान्ति के उत्सव को मनाया, और वास्तव में परमेश्वर को देखा।

मूल पाठकों के लिए, परमेश्वर की व्यवस्था के इस कृपालु और लाभकारी चरित्र के ऊपर महत्व ने अतीत में उनके अपने समय में परमेश्वर की व्यवस्था का अनुसरण करने की उनकी आवश्यकता के लिए उन्हें सावधान किया है। व्यवस्था परमेश्वर की ओर से उनकी समकालीन और भविष्य की भी परिस्थितियों के लिए वरदान थी।

इन विचारों के साथ ही, मसीह के अनुयायी होने के नाते, प्रत्येक बार जब भी हम निर्गमन की पुस्तक में इस्राएलियों के लिए परमेश्वर के आदेश को देखते हैं, हमें परमेश्वर को मसीह में दिए हुए कृपालु और लाभकारी वरदान में देखना चाहिए।

अब, हम जानते हैं कि उसके राज्य के उदघाटन में, यीशु और उसके प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं ने कलीसिया को नए प्रकाशन मूसा की व्यवस्था को हमारे युग में लागू करने के लिए दिया। परन्तु मत्ती 5:17 और रोमियों 8:4 और इब्रानियों 8:10 जेसे संदर्भ हमें स्पष्ट कर देते हैं कि यीशु और उसके अनुयायियों ने मूसा की व्यवस्था को किसी भी तरह कम नहीं किया है। ठीक यही कुछ राज्य की निरन्तरता के समय मे सत्य है। आज के समय में, हमें परमेश्वर की व्यवस्था के पालन किए जाने का प्रयास ऐसे नहीं करना चाहिए कि मानो मसीह नहीं आया है। परन्तु हमें सदैव इसे परमेश्वर के मसीह में दिए हुए प्रकाशन के आलोक में लागू करना चाहिए। और जैसा कि हम जानते हैं, कि जब मसीह का उसके राज्य की पराकाष्ठा के समय पुनरागमन होगा, उसके लोगों को पूरी तरह से पवित्र किया जाएगा। तब हम परमेश्वर की सिद्ध व्यवस्था का पालन करेंगे, जो कि हमारे हृदयों पर नई सृष्टि के समय लिखी हुई होगी।

हमने निर्गमन की पुस्तक के मुख्य विषयों की खोज यह देखते हुए की है कि परमेश्वर राजकीय व्यवस्था को संभालने वाला है, वह विजयी राजकीय योद्धा है, और वह राजकीय व्यवस्था की वाचा को देने वाला है। अन्तम में हमें निर्गमन 24:12-40:38 में परमेश्वर के उस विषय की ओर देखना चाहिए कि वह इस्राएल का वर्तमान का योद्धा है।

वर्तमान का योद्धा (24:12-40:38)

निर्गमन की पुस्तक इस्राएल के ऊपर यहोवा के शासन के बहुत ही रूचिपूर्ण विषय का प्रस्ताव देती है। अकसर जब लोग पुराने नियम का अध्ययन करते हैं, वह राजा शाऊल को इस्राएल के पहला राजा होने के रूप में सोचते हैं, और यह कि वही पहला पार्थिव राजा था। परन्तु जब आप निर्गमन 19:5 और 6 को पढ़ते हैं, तो यह इस्राएल को याजकों का राज्य कह कर पुकारता है।

ठीक है, आपके पास राजा के बिना राज्य नहीं हो सकता है, और इसलिए, निर्गमन 19:5-6 का दृष्टिकोण यह है कि इस्राएल का पहला राजा वास्तव में स्वयं परमेश्वर ही था। और यहाँ तक कि परमेश्वर ने पुराने नियम में मसीह में देहधारण नहीं किया था, परन्तु फिर भी वह स्वयं को दृश्य राजा और मसीह में अपने शासन को दिन में बादल और रात में आग के खंभे के चित्रों के माध्यम से करता है। मिलाप का तम्बू इम्मानुएल, अर्थात् "परमेश्वर हमारे साथ" का चिन्ह बन जाता है। और इसलिए, परमेश्वर का शासन इन चित्रों और चिन्हों में दिखाई देता है जिसे उसने इस्राएल को दिए जिनके द्वारा वह मसीह के द्वारा इस्राएल के ऊपर अपने शासन और राज्य को दिखाता है। - डॉ डॉन कोल्ट

हम परमेश्वर के राजा होने की उपस्थिति के विषय को सबसे अधिक स्पष्टता के साथ निर्गमन 20:12-40:38 में देखते हैं। यह निर्गमन के ऊपर मूसा के अधिकार और इस्राएल के मिलाप के तम्बू के ऊपर चौथा मुख्य विभाजन है। यह अध्याय पुनरावृत्ति करते हैं कि कैसे परमेश्वर ने मूसा को मिलाप के तम्बू को बनाने के लिए निर्देश

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

दिए, कैसे इस्राएली सीनै के पर्वत की तराई में आकर विफल हो गए और कैसे मूसा ने इस्राएलियों का मार्गदर्शन मिलाप के तम्बू के निर्माण के लिए दिया। इनमें से प्रत्यक घटना का महत्व परमेश्वर का उसके लोगों के साथ उपस्थित होने पर है। निर्गमन 33:14 में, परमेश्वर ने मूसा को आश्वस्त किया कि:

यहोवा ने कहा, मैं आप तेरे साथ चलूँगा और तुझे विश्राम दूँगा (निर्गमन 33:14)।

इस वचन में यह अभिव्यक्ति की "मैं आप चलूँगा" इब्रानी संज्ञा פָּנִים (*पानिम*) से अनुवाद हुआ है, यह एक ऐसा शब्द है जिसे अक्सर "चेहरे" के लिए अनुवाद किया जाता है। निर्गमन और अन्य स्थानों पर कई संदर्भों में, परमेश्वर का "चेहरा" उसके विशेष, तीव्र, आकर्षक और अकसर लोगों के साथ उसकी दिखाई देने वाली उपस्थिति के लिए संकेत देता है।

यद्यपि परमेश्वर सर्वव्यापी है, परन्तु फिर भी वह स्वयं को उसके लोगों के लिए पूरी बाइबल में विशेष तरीकों से समर्पित करता है। निर्गमन के इस हिस्से में, परमेश्वर की उपस्थिति मिलाप के तम्बू के निकट और इसमें निवास करती थी। जैसा कि हमने पहले इस अध्याय में उल्लेख किया है, कि मिलाप का तम्बू एक अराधनालय या एक ऐसे स्थान से बहुत अधिक बढ़ कर था जहाँ पर इस्राएल आराधना के लिए सभाओं को किया करते थे। इस्राएल ने परमेश्वर की आराधना मिलाप के तम्बू के पास की क्योंकि यह युद्ध के लिए परमेश्वर का राजकीय तम्बू था। बहुत कुछ प्राचीन मानवीय राजाओं के तरह ही जो कि राजकीय युद्ध के तम्बू में रहते थे जब वे अपनी सेना का मार्गदर्शन युद्ध में किया करते थे, परमेश्वर इस्राएल की सेना का मार्गदर्शन कनान की प्रतिज्ञात् भूमि की ओर करने के लिए मिलाप के तम्बू में निवास करता था।

अब, निर्गमन 32:1-34:35 में, परमेश्वर की उसके लोगों के साथ उपस्थिति गंभीरता के साथ खतरे में थी। इस वृतान्त में, हम इस्राएल की विफलता और सीनै पर्वत पर नवीकरण के वर्णन को सीखते हैं। जब परमेश्वर ने सबसे पहले इस्राएलियों को सीनै पर सोने के बछड़े की पूजा करते हुए देखा, तब उसे मूसा को छोड़कर पूरी जाति को नष्ट कर देने की धमकी दी। परन्तु मूसा की मध्यस्थता के कारण, परमेश्वर नरम पड़ गया और केवल उन्हें ही सजा दी जिन्होंने पाप किया था। परन्तु फिर भी, परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति को उसके लोगों से जब वे आगे की ओर बढ़ते हैं तब दूर कर लेने की धमकी दी। परन्तु ईश्वरीय राजा की उपस्थिति के बिना आगे बढ़ने का विचार ही कल्पना से परे था। सुनिए निर्गमन 33:15-16 को जहाँ पर मूसा ने परमेश्वर से ऐसा कहा है कि :

उसने उससे कहा, "यदि तू आप न चले, तो हमें यहाँ से आगे न ले जा। यह कैसे जाना जाए कि तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर और अपनी प्रजा पर है? क्या इस से नहीं कि तू हमारे संग संग चले, जिससे मैं और तेरी प्रजा के लोग पृथ्वी भर के सब लोगों से अलग ठहरें? (निर्गमन 33:15-16)।

यहाँ पर ध्यान दें कि मूसा ने परमेश्वर से कहा कि वह इस्राएलियों को आगे की ओर न भेजे "यदि [तू] आप न चले, तो [हमें] यहाँ से आगे न ले जा।" उसने आश्वासन को पाने की चाह की कि उनके मध्य में सब कुछ सही था। और उसने परमेश्वर से कहा वह उनसे उस बात को न ले ले जिससे वह "पृथ्वी भर के सब लोगों से अलग" ठहरते हैं, अर्थात् उनसे परमेश्वर की उपस्थिति। निर्गमन 33:17 में, परमेश्वर ने इस तरह से अपनी प्रतिक्रिया दी है:

मैं यह काम ,भी जिसकी चर्चा तू ने की है करूँगा; क्योंकि मेरे अनुग्रह की दृष्टि तुझ पर है, और तेरा नाम मेरे चित्त में बसा है (निर्गमन 33:17)।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं है तब जब निर्गमन 40:38, इस पुस्तक का अन्तिम वचन, परमेश्वर की उपस्थिति को मिलाप के तम्बू के साथ होने पर प्रकाश डालती है:

इस्राएल के घराने की सारी यात्रा में दिन को तो यहोवा का बादल निवास पर, और रात को उसी बादल में आग उन सभों को दिखाई दिया करती थी (निर्गमन 40:38)।

परमेश्वर की उसके लोगों के साथ उपस्थिति है। वह झाड़ी में मूसा के पास उपस्थित था। वह उसके लोगों के साथ आग और इस बादल के द्वारा उपस्थित होते हुए, आग के द्वारा रात और दिन के मध्य में बादल के

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

द्वारा मार्गदर्शन दिया करता था। और तब इस तरह से हम इस पुस्तक के अन्तिम अध्यायों में देखते हैं, कि पुस्तक का वह भाग जिसे अकसर अनदेखा कर दिया जाता है, परमेश्वर उन्हें एक तम्बू देता है, एक मिलाप का तम्बू। और मिलाप के इस तम्बू के भीतर वह उन्हें वाचा का सन्दूक देता है, जहाँ पर परमेश्वर की उपस्थिति प्रतीकात्मक रूप में वहाँ पर उपस्थित है। और इसके बारे में जिस बात को मैं प्रेम करता हूँ वह यह देखना है कि परमेश्वर ऐसा परमेश्वर है जो उसके लोगों के साथ होना चाहता है, जो मेरे लिए यूहन्ना 1 में सामना किए जाने वाली प्रतिछाया का स्पष्ट चित्रण है, जो ऐसा कहता है कि:

शब्द देहधारी हुआ और उसके लोगों के मध्य में डेरा किया (यूहन्ना 1:14 शाब्दिक अनुवाद)

पुराने नियम में परमेश्वर उसके लोगों के साथ होना चाहता था, और अतंत: परमेश्वर ने नए नियम में उसके लोगों के साथ होने के लिए अपने पुत्र यीशु को भेज दिया। - डॉ. डेविड टी. लैम्ब

नया नियम परमेश्वर की विशेष राजकीय उपस्थिति के विषय को मसीह के अनुयायियों के ऊपर मसीह के राज्य की तीन अवस्थाओं पर लागू करता है। मत्ती 18:20 और यूहन्ना 2:19-21 जैसे संदर्भ यह विवरण देते हैं कि उसके राज्य के उदघाटन में, स्वयं मसीह उसके लोगों के साथ परमेश्वर की अलौकिक राजकीय उपस्थिति के साथ था। सच्चाई तो यह है, कि यूहन्ना 14:4 इस्राएल के मिलाप के तम्बू और यीशु के प्रथम आगमन के मध्य में एक स्पष्ट सम्पर्क है। इस वचन को सुनिए:

वचन देहधारी हुआ और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा (यूहन्ना 1:14)।

यह अभिव्यक्ति कि "हमारे बीच में डेरा किया" यूनानी शब्द σκηνόω (*शकीनो*) से निकल कर आता है। पुराने नियम के यूनानी अनुवाद सेप्तुआजिन्त अर्थात् सप्तति अनुवाद इसी शब्द को इब्रानी क्रिया שָׁכַן (*शा*कान) का उपयोग करता है जो कि निर्गमन में मिलाप के तम्बू के लिए परमेश्वर की उपस्थिति में प्रगट होता है। इस तरह से, यह वचन संकेत देता है कि मसीह के देहधारण में स्वयं परमेश्वर उसके लोगों को विजय की ओर मार्गदर्शन दे रहा है।

इसके अतिरिक्त, प्रेरितों के काम 2:17 और रोमियों 5:5 जैसे संदर्भों शिक्षा देते हैं कि जब यीशु का स्वर्गारोहण हुआ, तो उसने अपने आत्मा को अपने अनुयायियों के ऊपर उंडेल दिया। इस तरह से, मसीह के राज्य की निरन्तरता के मध्य में, पवित्र आत्मा उसकी कलीसिया में वास करता है। जैसे परमेश्वर ने उसकी उपस्थिति को मिलाप वाले तम्बू में भर दिया था, आत्मा उसके लोगों को उसकी विशेष, तीव्र उपस्थिति से भर देता है जो दिन प्रतिदिन परमेश्वर की विजय और मार्गदर्शन के लिए गारंटी देता है।

और इसमें कोई सन्देह नहीं है, कि प्रकाशित वाक्य 21:3 जैसे नए नियम के संदर्भ भी यह शिक्षा देते हैं कि मसीह का देहधारण और आत्मा की उपस्थिति अब और कुछ नहीं अपितु नई सृष्टि में परमेश्वर की राजकीय उपस्थिति के आश्चर्य की प्रस्तावना है। जब मसीह उसके राज्य की पराकाष्ठा के समय पुन: वापस आएगा, तो वह सब वस्तुओं को नया बना देगा। और पूरी सृष्टि हमारे वर्तमान के योद्धा राजा की दृश्य महिमा से भर जाएगी।

सारांश

इस अध्याय जिसका शीर्षक "निर्गमन का सिंहावलोकन," में हमने घ्यान में रखने के लिए कुछ आरम्भिक सोचविचारों को परिचित किया, जिसमें इसका ग्रन्थकार, अवसर, मूल अर्थ और आधुनिक उपयोग सम्मिलित हैं। हमने निर्गमन की इस पुस्तक को दो मुख्य भागों में विभाजित करते हुए इसकी सरंचना और विषय-वस्तु की भी खोज की। और हमने कुछ मुख्य विषयों को देखा जिसमें यह कि कैसे परमेश्वर के शासक होने के बहुत से आयाम पूरी पुस्तक में प्रकाशित होते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

निर्गमन की पुस्तक के उसके मूल पाठकों के लिए अत्यधिक महत्व थे जब उन्होंने मूसा के साथ प्रतिज्ञात् भूमि की सीमा पर अपने तम्बूओं को खड़ा किया। जब इस्राएलियों ने उनके अपने दिनों में परमेश्वर के लिए जीवन यापन करने की चुनौती को पूरा करते हैं, निर्गमन उन्हें उनकी जाति के लिए परमेश्वर-नियुक्त अगुवे के प्रति समर्पित होने की पुन; पुष्टि करने की बुलाहट देती है। इस पुस्तक ने उन्हें मूसा की मिस्र के छुटकारे से लेकर सीनै पर्वत तक पहुँचने को स्मरण दिलाया कि कैसे परमेश्वर ने उन्हें प्रतिज्ञात् भूमि के लिए तैयार किया था।

बहुत कुछ इसी तरीके से, मसीह के आज के अनुयायी होने के नाते, निर्गमन की पुस्तक हमें भी मूसा के अधिकार के प्रति निष्ठावान रहने की पुष्टि करने की बुलाहट देती है, परन्तु उस प्रकाश में जो कुछ परमेश्वर ने मसीह में पूरा किया है। जितना परमेश्वर ने इस्राएल के अगुवे होने के नाते मूसा के माध्यम से किया, निर्गमन की पुस्तक हमें दिखाती है कि उससे कहीं अधिक परमेश्वर ने मसीह के द्वारा पूरा किया। मसीह में, परमेश्वर ने हमें पाप की गुलामी और शैतान के राज्य से छुटकारा दे दिया। और मसीह में, परमेश्वर ने हमें मसीह की आत्मा की उपस्थिति और हमारे मार्गदर्शन के लिए निर्देशों को दिया है। और इस प्रकाश में, निर्गमन की पुस्तक हमें अधिक से अधिक सीखने के लिए असँख्य अवसर प्रदान करती है कि हमें किस तरह से मसीह का अनुसरण करना चाहिए जब वह हमारा मार्गदर्शन नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में प्रतिज्ञा किए हुए शाश्वत उत्तराधिकार की ओर करता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम